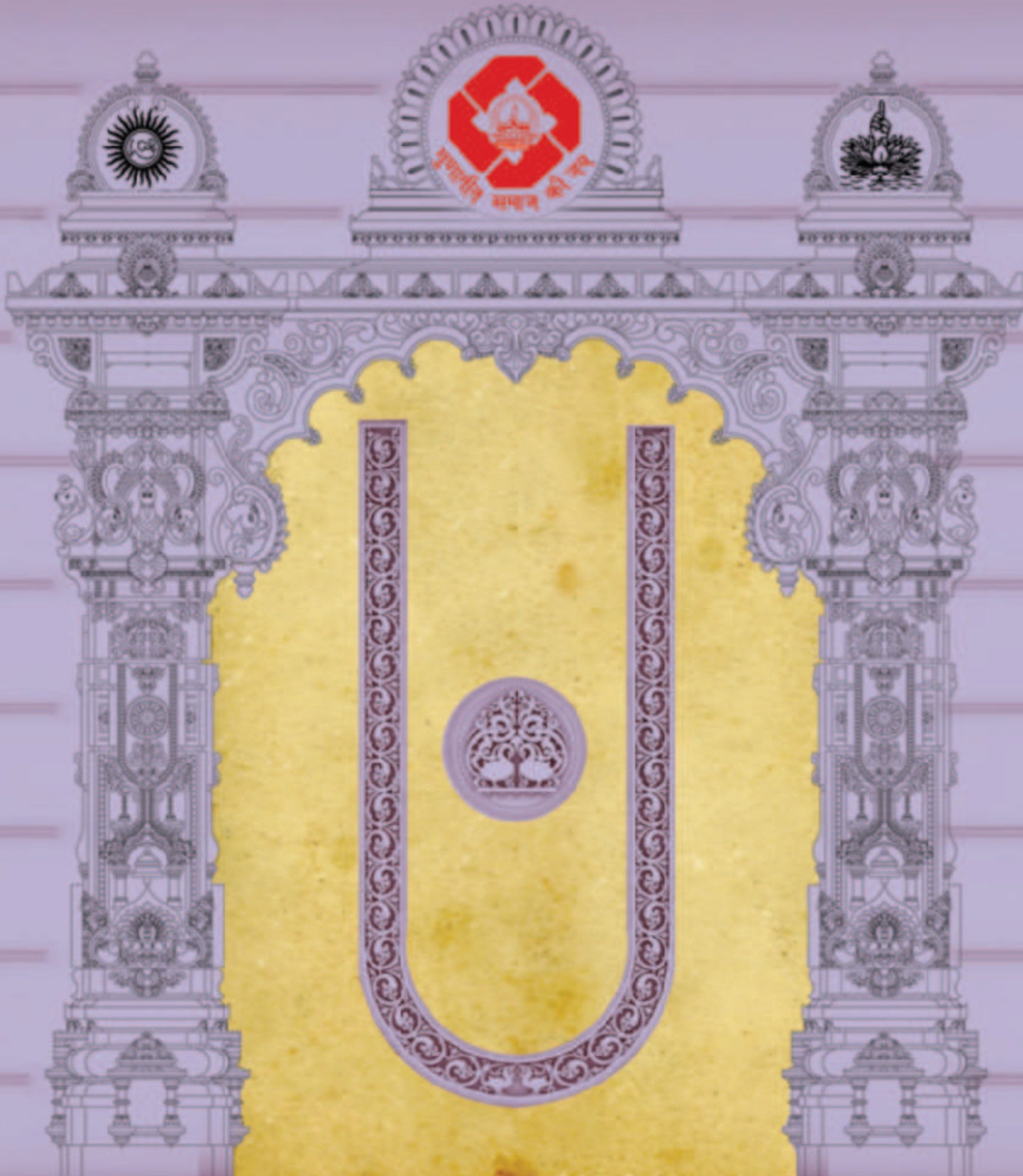

हमारा मंदिर

हमारा मंदिर

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् ।
विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥

शिक्षापत्री, ११६

प्रकाशक :

श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर

'ताड़देव', काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोकविहार–III

दिल्ली–110 052 (भारत) फोन : 011–2730 1327

ई–मेईल : taaddev@ydsd.org

प्रथम आवृत्ति :

गुरुहरि प.पू. काकाजी महाराज साक्षात्कार हीरक जयंती दिन

3 फरवरी 2012, शुक्रवार

प्रत : 1500

मूल्य : ₹ 301/-

टाईप सॅटिंग :

अक्षरज्योति महिला केन्द्र

काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोक विहार–III,

दिल्ली–110 052 (भारत) फोन : 011–2730 5199

ई–मेईल : aksharjyoti@ydsd.org

मुद्रक :

प्रीतिका प्रिंटर्स

A21/27, नारायणा इन्डस्ट्रीयल एरिया

दिल्ली–110 028 (भारत)

'CARING' thy name is 'GURUJI'

योगी परिवार 2012 आनंदोत्सव

3 FR 4 SA 5 SU

February

गुणातीत समाज की जय

।।स्वामिश्रीजी।।

स्वस्तिक, जल, उसमें कमल, उसके ऊपर दीपक, उसकी ज्योत और उसमें से चहुँ ओर-सर्वत्र फैलता प्रकाश– यूँ छः चिह्नों से **‘गुणातीत समाज’** का प्रतीक तैयार हुआ है।
सदियों से हमारी संस्कृति में चार पंखुड़ी वाले **‘स्वस्तिक’** को एक मंगल चिह्न के रूप में स्वीकार किया गया है।
सो, इसमें गुणातीत समाज की चार पंखुड़ियों के रूप में दीक्षित संतों, व्रतधारी-युवकों, बहनों और भगवान व संतों को समर्पित गृहस्थों को-मांगल्य के रूप में समाविष्ट किया है।
आज से दो सौ तीस वर्ष पूर्व अतिशय करुणा करके भगवान स्वामिनारायण ने पृथ्वी पर मानव स्वरूप में अवतार लिया
और मानव मात्र के लिए मूल अज्ञान का नाश करके आत्यंतिकी मुक्ति सुलभ की। तत्पश्चात् उन्हें अखंड धार कर रहने वाले अनादि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी ने
महाराज की सर्वोपरिता का प्रतिपादन करके, अक्षररूप होकर, परब्रह्म की भक्ति का **‘अचिमार्ग’** खोल दिया।
तब से आज तक उनके अनुगामी गुणातीत सत्पुरुषों ने वही कार्य जारी रखा है। **‘कमल’** ऐसे सत्पुरुष का प्रतीक है।
ऐसे सत्पुरुष **‘जल’** रूपी अंधकार या जगत से अलिप्त ही रहे हैं। जगत में रहने के बावजूद, जगत का पाश उन्हें स्पर्श नहीं करता।
उन्हें पहचान कर, उनका आसरा करके जो जीव भगवान और संत को केन्द्र में रख कर जीवन जिए
वह वचनामृत वड़ताल 19 के मुताबिक ‘भक्त’ बनता है और सत्पुरुष की इच्छा ही उसका प्रारब्ध बनता है।
काल-कर्म-माया का नियम उस पर लागू नहीं होता। वह ब्रह्मनियंत्रित है।
ऐसे भक्त चाहे किसी भी ‘आश्रम’ में क्यों न हों, अर्थात्– भले ही वे संत, व्रतधारी युवक, बहनें या समर्पित गृहस्थी हों–
उनकी चेतना का विकासक्रम महाराज ऐसा बना देते हैं कि उनके संबंध में आने वाले जीव भी एकांतिकभाव के मार्ग पर चलने लगते हैं;
क्योंकि ऐसे भगवदी या एकांतिक **‘चैतन्यमाध्यम’** के रूप में वर्तते रहते हैं। वे जो सत्यसंकल्प करते हैं, वह **‘दीपक’** कहलाता है।
उसमें महाराज का अनुग्रह यानि कि पराशक्ति सम्मिलित होने से, जीव में दिव्यभाव की **‘ज्योत’** द्वारा, गुणातीत अस्मिता के रूप में, सुहृद्भाव का **‘प्रकाश’** सर्वत्र फैलता है
और इस प्रकार समग्र गुणातीत समाज में दिव्यभाव और सुहृद्भाव फैलते हुए ज्योत से ज्योत प्रगटती है।
केवल वृत्ति पर चलता प्राणी ‘पशु’ और बुद्धि से नियंत्रित सर्वोपरि प्राणी ‘मानव’ कहलाता है!
गुणातीत स्वरूपों ने दो सौ वर्ष में मानव में से ‘महामानव’ का नूतन सर्जन किया। वह क्या?
तो, बुद्धि से परे साकार ब्रह्म–गुणातीत द्वारा नियंत्रित महामानव का सर्जन किया और... मानसिक, अलौकिक या सिद्धदशा की भूमिका से पर का–बौद्धिकवाद से परे का
केवल ब्रह्मनियंत्रित जीवनमुक्तों का–महामानव का समाज–**‘गुणातीत समाज’** अस्तित्व में आया।
उनके अल्प संबंध में जो आए उसके लिए भी महाराज ने कहा, *हम कल्याण करेंगे*; और... वह संबंध इस हद तक का कि-
जिस पेड़ के नीचे वो बैठे, जिस गाय का वो दूध पिए, जिसके घर का पानी पिए या पिलाए, उन सबका कल्याण करने की करुणाभरी दृष्टि प्रभु ने रखी। उनकी यह कैसी सर्वोपरिता!
शिक्षापत्री के श्लोक 116 के मुताबिक ‘निजात्मानं ब्रह्मरूपं...’ यही इस समाज के मुक्तों का अंतिम लक्ष्य होता है।
तभी तो, ऐसे जीवनमुक्तों के समाज के यानि कि ‘गुणातीत समाज’ के जयघोष के द्वारा हमारे प्रचलित भजन की ध्रुवपंक्ति–

‘जोगी ने स्थापा ब्रह्मसमाज, उसके सदस्य बन जाएँ, ब्रह्मरूप हो परब्रह्म की आज सेवा करने शरण ले लें।’

सार्थक होती है।

[प.पू. काकाजी ने प.पू. गुरुजी के साथ सबसे पहली बातचीत 'सूर्य' के विषय से शुरू की थी और... 1986 की 25 जनवरी को 'सूर्य' के ही आशीर्वाद देकर उसकी पूर्णाहुति की!

घटना ऐसी थी कि प.पू. गुरुजी ने 1953 में मुंबई के सुंदराबाई हॉल में प.पू. योगीबापा और प.पू. काकाजी के पहली बार दर्शन किए और प.पू. बापा से उनकी मूर्ति माँगी;

तब प.पू. बापा ने उनसे कहा– *दादुभाई साहेब से मिलना, उनके पास से मिल जाएगी।* यूँ, **प.पू. बापा का यह पहला ही चरित्र प.पू. गुरुजी के लिए बहुत रहस्ययुक्त और सांकेतिक था कि प.पू. काकाजी उनकी चेतना के मार्गदर्शक रहेंगे।** एक-दो दिन के बाद प.पू. गुरुजी ताड़देव गए और प.पू. काकाजी से प.पू. बापा की मूर्ति माँगी। प.पू. काकाजी ने उन्हें अपने ऑफिस आने के लिए कहा। प.पू. गुरुजी प.पू. काकाजी के ऑफिस गए।

वहाँ प.पू. काकाजी उन्हें मूर्ति देते हुए बातों-बातों में बोले–

ये योगीजी महाराज एक सूर्य हैं। सूर्य यदि 'प्रगट' नहीं हो, तो अंधकार जाता नहीं। ऐसे ही भगवान भी 'प्रगट' होने चाहिए और ***भगवान स्वामिनारायण का यह बेमिसाल वरदान है।***

फिर अपनी छाती पर हाथ रख कर बोले– *बापा तो 'सूर्य' हैं ही, लेकिन* ***बापा के प्रताप से मैं भी एक 'सूर्य' हूँ।*** **आश्चर्य की बात है कि पहली ही मुलाकात में प.पू. काकाजी ने प.पू. गुरुजी से यह गूढ़ रहस्य की बात की!**

यूँ सूर्य की बात से उन्होंने 1953 में प.पू. गुरुजी को अपना संबंध दिया और 1986 की 25 जनवरी को आख़िरी बार जब स्थूलरूप से प.पू. गुरुजी से मिले

तब सूर्य के अनुसंधान में ही आशीर्वाद दिए– ***'आकाश में वह सूर्य, मैं भी सूर्य और तुम्हारे हृदयाकाश में भी सूर्य है–जाओ, आज से तीनों एक!'***

प.पू. पप्पाजी के शब्दों में– ***'यह था गुरु द्वारा किया गया शक्तिपात!'*** और... साधु की सिद्धि की यही पराकाष्ठा है।]

सूर्य को अनादि काल से सकल सृष्टि का आधार कहा जाता है। सूर्य ब्रह्मांड का केन्द्र है और उसके आसपास सभी ग्रह परिक्रमा करते हैं।

सूर्य द्वारा ही हमें प्रकाश मिलता है, अंधकार दूर होता है। सूर्य से ही हमारे जीवन में प्रत्येक दिन का प्रारंभ होता है। सूर्य द्वारा ही हमें उष्मा अर्थात् गर्मी मिलती है।

सूर्य द्वारा ही उर्जा अर्थात् शक्ति मिलती है। सूर्य के प्रकाश से बीज के अंकुर फूटते हैं। सूर्य सचेतनता और संजीवनी का प्रतीक है; निश्चलता और सनातनता का प्रतीक है।

पृथ्वी के अपनी धुरी पर परिक्रमण करने के कारण हमें सूर्य के उदय और अस्त होने का भ्रम होता है, परंतु वास्तव में तो आदिकाल से सूर्य अपने निश्चित स्थान पर अचल है।

सूर्य निरपेक्षता का प्रतीक है। वह हमें जो देता है, उसके बदले में हम से उसे कोई अपेक्षा नहीं है।

सच में तो वह हम से इतना ऊँचा और दूर है कि उसे कुछ देना तो क्या, उसके नज़दीक भी हम पहुँच नहीं सकते। सूर्य सातत्य का प्रतीक है, करोड़ों वर्ष से वह एक सरीखा प्रकाशमान रहा है।

सूर्य परोपकार का प्रतीक है। ख़ुद जल कर, तकलीफ सह करके हमें गर्मी, शक्ति, प्रकाश देता है। सूर्य हमें शीतलता भी देता है।

दरअसल चंद्र का आह्लादक और शीतल प्रकाश भी तो सूर्य में से परावर्तित हुआ प्रकाश ही है।

सूर्य को पावक भी कहते हैं, क्योंकि उसका ताप वातावरण को स्वच्छ और निरोगी बनाता है, हवा को शुद्ध और जंतुमुक्त करता है।

सूर्य की ऐसी अनेक विशिष्टताओं के कारण समर्थ गुरु को–गुणातीत सत्पुरुष को सूर्य की उपमा दी जाती है।

सत्पुरुषरूपी सूर्य से ही हमारे भीतर का अंधकार दूर होकर, हम में दिव्य ज्ञान और चेतना का प्रकाश होता है, हमें नई उर्जा मिलती है।

भगवान स्वामिनारायण ने जो पाँच देव मान्य किए हैं, उनमें से एक सूर्य है।

प.पू. काकाजी भी गुणातीत सत्पुरुष को सूर्य की उपमा देते हुए कहते– **सत्पुरुष की कृपा सूर्यसमान एक जैसी सभी जीवप्राणी मात्र के ऊपर सतत बरसती रही है।**

साथ ही, आकाश के सूर्य, सत्पुरुषरूपी सूर्य और हमारी आत्मा में विराजमान सत्पुरुषरूपी सूर्य को एक करके उच्च आध्यात्मिक स्थिति पर पहुँचने के लिए वे सभी को अनुरोध करते।

और... जैसा कि आरंभ में बताया– अपने पसंदीदे पात्रों पर केवल-केवल अनुग्रह करके उस हेतु 'शक्तिपात' भी किया!

प.पू. काकाजी ख़ुद सूर्य समान गुणातीत सत्पुरुष थे। सूर्य की तरह अनेक दिव्य कल्याणकारी गुणों से उनका व्यक्तित्व और समग्र जीवन परिपूर्ण था।

सो, **प.पू. गुरुजी** ने सूर्य में **प.पू. काकाजी** का हस्ताक्षर रख कर इस **प्रतीक** को प्रचलित किया।

ऐसे अनुपम विरल सत्पुरुष हमें माँ-बाप के रूप में मिले, इस बात का गर्व और धन्यता की अनुभूति यह प्रतीक कराता है।

प.पू. काकाजी को क्या अंजलि अर्पण करें? इतनी ही प्रार्थना करें– **काका हे! अमर रहो, हृदयाकाशे सदा रहो...**

गुजराती में निम्न अर्थ की एक प्रसिद्ध साखी है–

संसार में रसमस रहे, फिर भी मन मेरे पास;
संसार जिसे छूए नहीं, उसे जानो हरि का दास।

इ.स. 1977 में पद्ममार्ग की शिविर में प.पू. पप्पाजी द्वारा प्रचलित किया गया यह प्रतीक,
समय के गुजरते **प.पू. पप्पाजी** के ही **प्रतीक** के रूप में प्रसिद्ध हुआ।
भक्तभाव की कुछ ऐसी ही परम पावनकारी स्थिति का प्रतिपादन यह करता है।
'पद्म' अर्थात् कमल कीचड़ में उगता है।
इसीलिए उसका दूसरा नाम 'पंकज' यानि कीचड़ में पैदा हुआ यह भी है।
यह एक ऐसा फूल है जो कीचड़ में पैदा होने के बावजूद, कीचड़ की गंदगी या दुर्गंध से अलिप्त है।
इस प्रतीक में–पानी से लथपथ कीचड़ में रहे कमल के रूप में जगत-संसार के कलुषित माहौल से घिरा 'भक्त' दर्शाया है।
कमल सूर्य की ओर दृष्टि रख कर उसकी ऊर्जा खींचता है, अतः न तो कीचड़ से वह मैला होता है
और न ही उसमें उसकी दुर्गंध का रंचमात्र आभास होता है! बल्कि वह आह्लादक व सुगंधित है।
ऐसे ही संसार-जगत में रहता भक्त भले उसमें कितना ही डूबा हुआ हो, लेकिन उसके जीवन में यदि भगवान और संत ही केन्द्र स्थान पर हों,
तो उसे जगत-संसार का पाश नहीं लगेगा। वह उससे अलिप्त ही रहेगा।
प्रतीक में **'उंगली'** द्वारा प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूप को इंगित करते हुए यही निर्देश दिया है कि–
प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूप ऐसे जीव को सतत और सदैव प्रभुमय ही रखते हुए,
उसे सूर्यरूपी सहजानंद का पूर्ण संबंध करा कर, अक्षरधाम रूप बना कर, उसका तन तेजोमय बना कर,
शाश्वत् सुख का भोक्ता बना कर उसके जीवन में धन्यता प्रगटा देते हैं।
कमल यदि डंडी से अलग नहीं होगा, तो दलदल में धँसेगा नहीं या जल में डूबेगा नहीं।
ऐसे ही स्वधर्म और निष्ठा में दृढ़ रहता भक्त सत्पुरुष की अनुवृत्ति के मुताबिक सेवा-प्रवृत्ति-कर्मयोग करता रहे, तो वह निर्गुण ही है।
एक शब्द प्रयोग है–**'जलकमलवत्'** अर्थात् जैसे दलदल में रहने के बावजूद कमल निर्लेप है,
वैसे ही वह भक्त भी, देहभाव और जीवभाव से परे, अखंड गुणातीतभाव में रह कर,
सहजानंदरूपी सूर्य के प्रकाश को पाकर, निर्दोष और निष्काम बन कर
सर्वोच्च धन्यता का अनुभव करता हुआ अपनी निजी सौरभ फैला कर सभी को धन्य करता है।
वास्तव में यही है सद्यसाधना का **'संतमार्ग'**।
मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी ने इसी को **'अर्चिमार्ग'** कहा है।
प.पू. काकाजी ने इसे बेचैनी-तकलीफ-विघ्नरहित साधनामार्ग बताया है।

जिस प्रकार बलिराजा के घर भगवान आज भी पहरा दे रहे हैं,
वैसे ही दादुभाई ने शास्त्रीजी महाराज को बांधा हुआ है।

– गुरुहरि योगीजी महाराज

शून्य में से इसका सर्जन 'काका' तुमने ही करा है,
वृक्ष बड़ा फलदार भले ही, जड़ में आप समाए...

- *प्रभु कृपा से दिल्ली का (सत्संग) खूब शोभ उठेगा...*
  निष्ठा वाले भक्त तुम्हें मिल जाएँगे व भारी डंका बजेगा - ऐसी प्रार्थना करता हूँ। (19.9.74)

- *राजधानी में शास्त्रीजी महाराज के संकल्प से सत्संग खूब ही बढ़ने वाला है, उसमें तुम्हें निमित्त बनना है।*
  तुम पर मेरी अंतर की प्रसन्नता है। अतः ज़रा भी घबराए बिना निधड़क काम करते रहना।
  हमारे सारे संप्रदाय में दिल्ली का सेंटर अनोखा होने वाला ही है और उसमें तुम्हें निमित्त बनना है। (1975)

- *तुमने मेरे जैसी मिस्टिरियस विभूति पर संपूर्ण भरोसा किया, तो तुम्हें खूब फायदा हो जाएगा।* (11.9.76)

- ***हे आनंदस्वामिजी –***
  अब हरियाणा और पंजाब का उद्धार करो, उद्धार करो। वक्त पक गया है। (7.11.77)

- *काका तो मुश्किल में हैं ही और तुम्हारा ही निजी रह कर साथ दूँगा।*
  दिल्ली तो राजधानी, सो उसकी महत्ता भी खूब है। वहाँ खूब विकास होगा...
  ज़रा भी कमी लगे, तो काकाजी तो अखंड तैयार बैठे ही हैं।
  तीनों स्वरुपों में भेदभाव नहीं रखना। तुम्हें नहीं है, सो मुझे खूब ही शांति है।
  भविष्य में भारी काम का डंका बजेगा
  और
  सारा सत्संग देखता रह जाएगा कि वाह! मुकुंदजी ने कमाल कर दिया!!
  हम, अक्षरपुरुषोत्तम के गुणातीत ज्ञान वाले हैं – वह विश्वधर्म हुआ
  और
  तुम सर्वदेशीय समझदारी से काम लेते हो, सो धीरे-धीरे अच्छा मेल होगा। (31.7.78)

- *तुम्हारी साधना की पूर्णाहुति हो और तुम प्रभु का कार्य करते बनो*
  ऐसी अभिलाषा करता रहा हूँ और आधी रात को भी तुम्हारे काम के लिए खड़ा रहूँगा।
  फिर चिंता कहाँ रही? **(18.6.79)**
- *मेरे कृपापात्र हो। तो प्रभु का काम प्रभु ज़रूर करेंगे ही।*
  चिंता नहीं करना। केवल मूर्ति को ही सब कुछ करने देना।
  तुम स्मरण करते रहना और भावना यही रखना कि प्रभु आप ही सूझ देना। **(18.6.79)**
- *तुम्हारी समझ को धन्यवाद है। प्रभु अद्भुत कार्य-सत्कर्म कराएँगे ही।*
  ज़रा सी-तनिक भी चिंता नहीं करना... तुम्हारे द्वारा बड़े-बड़े काम करवाने हैं। **(23.4.80)**
- *हम भी खुल्ली मदद करेंगे ही... तुम्हारे संकल्प और प्रार्थना में भी 'रामबाण' ताक़त है...* **(1980)**
- *वहाँ का मंडल तुम्हारा खूब साथ देगा ही।* **(16.11.82)**
- *तुम्हारे संकल्प में खूब ताक़त होती है।* **(12.1.83)**
- *निजी को–बेटे को क्या आशीर्वाद देने होते हैं?*
  *...सिर्फ-आध्यात्मिक भूमिका में ही–***Divine consciousness** *में अखंड जाग्रतता से रहने का*
  सनातन कार्य दिल्ली में भी मंदिर होने पर अचूक होगा ही
  और
  गुणातीत ज्ञान का संदेशा दिल्ली से भी विश्व में फैलेगा–ऐसे शुभाशीष हैं।
  शर्त केवल–
  सद्भाव और सुहृद्भाव की ही है। जोड़ में ही काम करने की है।
  ...दिल्ली के भक्तों ने हमारी बहुत ही शोभा बढ़ाई है।
  फलस्वरूप अब सुंदर–सर्वोत्तम मंदिर
  गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज और पू. योगीजी के संकल्प से ही देखते ही देखते बन ही जाएगा।
  ...तुम्हारे संकल्प और प्रार्थना से प्रभुजी फटाफट मंदिर बनवा ही देंगे व सभी को सेवा का लाभ मिलेगा

और

इससे ***दुगना*** *प्रभु ज़रूर, ज़रूर, ज़रूर दे ही देंगे इसकी गारंटी रखना।*

...किसी का भी ज़रा भी देखना ही नहीं। प्र. 16 के मुताबिक सिर्फ अंतर्दृष्टि और प्रार्थना ही।

देखो, कैसा चमत्कार होता है।

जय जयकार हो जाएगा। **(11.3.83)**

- *दिल्ली में प.पू. बापा का दिव्य संकल्प –*

  84 बंदरगाहों की पताका फहरेगी ही इसकी गारंटी रखना। **(22.6.83)**

- *तुम बहुत विचक्षण समझदार और मेरे प्रति विशिष्ट लगाव वाले हो*

  इस बात की मुझे विश्वासपूर्वक प्रतीति है।

  तो, दिल्ली में आत्मबुद्धि और प्रीति युक्त सर्वोपरि समझ वाला–

  अत्यं. 11 जैसी सीताजी की समझदारी वाला समाज तैयार करने में ही

  सच्ची द्विशताब्दी मनाई मानी जाएगी।

  अब बड़ा मंदिर हो जाएगा और देवी-देवता अपने आप आकर कर जाएँगे।

  तुम तो केवल मूर्ति में ही रह कर सभी क्रियाएँ करते जाना। **(10.12.85)**

ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज

ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज द्वारा प.पू. गुरुजी एवं दिल्ली मंदिर पर समय-समय पर किसले ये अनवरत आशीर्वाद आज साकार हुए नज़र आते हैं। दूसरी ओर, प.पू. गुरुजी की अनुपम गुरुभक्ति का हुबहू दर्शन भी होता है। 'ताड़देव' मंदिर की-'हमारा मंदिर' की संक्षिप्त झांकी कराती इस पुस्तिका को प्रकाशित करते हुए, श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज एवं सभी गुणातीत स्वरूपों के श्रीचरणों में प्रणामपूर्वक यही प्रार्थना है कि **इस मंदिर में आने वाले प्रत्येक को यह अपना ही लगे** और उसके लिए जैसे प.पू. गुरुजी ने अपना संपूर्ण तंत्र काकामय ही बना लिया, वैसे ही उनके संबंध और बल से हम अपने तंत्र को भी काकाजीमय-गुरुजीमय बना लें...

आओ, ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के **साक्षात्कार की हीरक जयंती** एवं **प.पू. गुरुजी के** 75**वें प्राकट्योत्सव** के अवसर की स्मृतियों को चिरंजीव रखने के लिए 'ताड़देव' परिसर के कण-कण में बसी प.पू. गुरुजी की पराभक्ति की सौरभ महसूस करें...

योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव की जय हो! जय हो! जय हो!

राकेश शाह *के प्रणामपूर्वक जय स्वामिनारायण*

3 फरवरी 2012, शुक्रवार

‘यह तुम्हें मैं नहीं भेज रहा, प.पू. बापा की इच्छा है और तुम्हें जाना है...’

– प.पू. काकाजी

1967

IPSR की बिल्डिंग
जहाँ प.पू. गुरुजी सर्वप्रथम दिल्ली आकर ठहरे।

1969

भारत साधु समाज की बिल्डिंग
जहाँ बाद में प.पू. गुरुजी अकसर ठहरते।

1974

अशोकविहार A-116 नंबर की कोठी, जहाँ 1974 में
स्थाई रूप से दिल्ली रहने की प.पू. काकाजी ने आज्ञा दी।

1975

अशोकविहार A-54 नंबर की कोठी
जहाँ नौ महीने रह कर सत्संग हेतु कार्यरत रहे।

1976

अशोकविहार A-103 नंबर की कोठी जहाँ
17 साल और 7 महीने लगातार रहकर एक दिव्य कुटुंब का सर्जन किया।

1985

दिल्ली मंदिर की जमीन को तीर्थत्व प्रदान करते
प.पू. काकाजी...

तुम्हारे लिए नई दिल्ली में
'आई.पी.एस.आर.' और 'भारत साधु समाज' के सुंदर आलीशान मकान में रहने-करने की सारी व्यवस्था ***श्री नंदाजी*** *ने कर दी है।*
सब कुछ केवल प.पू. बापा की ही दृष्टि से-इच्छा से हो रहा है; वर्ना तो एकदम सब कुछ तैयार कहाँ से मिले ?
श्री शर्माजी भी खास तुम्हारे लिए उस ओर आएँगे...

– प.पू. काकाजी

मंदिर के लिए मिली जमीन को समतल करने हेतु सेवायज्ञ....

नया युग शुरू होगा...
पू. बापा के कार्य की शोभा बढ़ाओ ऐसे शुभाशीष हैं...
– प.पू. काकाजी

सभी को सेवा का लाभ मिलेगा...
दुगना प्रभु जरूर, जरूर, जरूर दे ही देंगे...
– प.पू. काकाजी

मंदिर, ठाकुरजी और गुरुजी की अनन्यभाव से उत्साहपूर्वक सेवा कर लेना।
उसमें हमारी अंतर की खूब प्रसन्नता मिलेगी; प्रभु तुम्हारे काम हल्के-आसान करके सफल करेंगे... – प.पू. काकाजी

मंदिर निर्माण से पूर्व जमीन पर ढूँढाहेड़ा व इटेड़ा के भक्तों एवं प.भ. अमृत पटेल साहेब द्वारा बनाई झोपड़ियों में अन्नकूटोत्सव...

तुम लोगों ने यह झोपड़ी बनाई,
महाराज तुम्हारे महल बना देंगे।

– प.पू. काकाजी

प्रगट गुणातीत स्वरूपों की निश्रा में दिल्ली मंदिर की शिलान्यास विधि – 3 फरवरी, 1988

अब सुंदर सर्वोत्तम मंदिर गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज और पू. योगीजी के संकल्प से देखते ही देखते बन ही जाएगा।

– प.प. काकाजी

दिल्ली मंदिर की शिलान्यास विधि – 3 फरवरी, 1988

तुम्हारे संकल्प और प्रार्थना से

प्रभुजी फटाफट मंदिर कर देंगे...

– प.पू. काकाजी

‘स्वामिनारायण मार्ग’ का उद्घाटन – 24 फरवरी, 1990

इस मार्ग से हिन्दू, मुस्लिम, जैन, ईसाई जो भी गुज़रेगा, वह यदि पूछेगा – यह ‘स्वामिनारायण मार्ग’ और ‘काकाजी लेन’ क्या है? इतने में भी उसका कल्याण महाराज करने वाले हैं।

– प.पू. पप्पाजी

यह मार्ग सिर्फ एक मार्ग नहीं है; सिर्फ एक रास्ता नहीं है, यह रास्ता कल्याण का रास्ता बना। कल्याण का परम मार्ग बना - दिव्य मार्ग बना।

– प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी

‘काकाजी लेन’ का उद्घाटन – 24 फरवरी, 1990

*स्वामिनारायण भगवान और गुणातीतानंदस्वामिजी ने कहा है कि एक बार भी कोई ‘स्वामिनारायण’ नाम बोलेगा, उसका **‘कल्याण’** हो जाएगा। यहाँ से जो भी गुजरेगा वो नाम तो पढ़ेगा ही, उन सबका **‘कल्याण’** हो जाएगा और... ‘काकाजी लेन’ पर आएगा, तो पूछेगा कि काकाजी कौन हैं? तो सभी बताएँगे कि वहाँ गुरुजी बैठे हैं। वो गुरुजी के पास जाएँगे... चैतन्य का **‘आत्यंतिक कल्याण’** भी हो जाएगा।*

– प.पू. साहेब

भविष्य में हम कभी भूलें नहीं कि इनकी बदौलत यहाँ सब कुछ है, सो यह नाम रखवाया है! – प.पू. गुरुजी

दिल्ली में श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज और गुणातीत स्वरूपों की सर्वप्रथम स्थापना – 3 फरवरी, 1994

गुणातीत ज्ञान का संदेशा दिल्ली से भी विश्व में फैलेगा ऐसे शुभाशीष हैं। – *प.पू. काकाजी*

श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की मूर्तिप्रतिष्ठा – 3 फरवरी, 1994

तुम पर मेरी अंतर की प्रसन्नता है।
तो, ज़रा भी घबराए बिना बेहिचक काम करना।
– प.पू. काकाजी

हमारे सारे संप्रदाय में दिल्ली का सेन्टर अनोखा होने वाला है और तुम्हें उसमें निमित्त बनना है। – प.पू. काकाजी

‘अक्षरज्योति’ की शिलान्यास विधि – 3 फरवरी, 1997

तुम्हारी शुद्ध आत्मारूपी गुलाब की खुश्बू हर जगह गुरुजी और प्रभु के लिए फैले।

– प.पू. काकाजी

‘ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज साक्षात्कार स्वर्णजयंती’ की स्मृति में ‘स्वर्णजयंती द्वार’ – 29 मार्च, 2002

मेरा साक्षात्कार – ज्ञान समाधि का साक्षात्कार है, जहाँ ज्ञान समाप्त हो गया... – प.पू. काकाजी

ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज की मूर्तिप्रतिष्ठा– 25 मार्च, 2007

तुम्हारी समझ को धन्यवाद है। प्रभु अद्भुत कार्य-सत्कर्म कराएँगे ही... तुम्हारे द्वारा बड़े-बड़े काम कराने हैं।

– प.पू. काकाजी

'ताड़देव' मंदिर का 'कल्पवृक्ष' प्रार्थना हॉल– ना भूतो, ना भविष्यति!

गुरुवर्य योगीजी महाराज के संकल्प एवं ब्रह्मस्वरूप काकाजी की आज्ञा से 1967 से भगवान श्री स्वामिनारायण का संदेश फैलाने प.पू. गुरुजी ने दिल्ली आना-जाना शुरू किया था। चाणक्यपुरी के 'भारत साधु समाज' और अशोकविहार में किराए की कोठी में करीब 25 साल तक रहने के बाद 1993 में प.पू. गुरुजी अर्धनिर्मित मंदिर में रहने के लिए आए। **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के अमृतपर्व** के मंगलकारी वर्ष में–**1994 की 3 फरवरी** को मंदिर के अर्धनिर्मित हॉल में ही श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज एवं प्रगट गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियाँ स्थापित करवाईं और... इसके **16 साल बाद यानि–25 जुलाई 2010 गुरुपूर्णिमा के मंगलकारी दिन,** भूले न भुलाए ऐसा यह अद्‌भुत **'कल्पवृक्ष'** हॉल गुणातीत समाज के **'ज्यों का त्यों इतिहास'** का चिरंजीव दर्पण बना!

जूनागढ़ मंदिर में मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी ने धर्मशाला बनवाई थी... उसमें लकड़ी के ऊँचे-ऊँचे स्तंभों की नक्काशी इतनी सुंदर करवाई थी कि जो 'सत्संगी' नहीं थे, वे भी उसे विशेष रूप से देखने आते रहते और... उसे देख कर सब दाँतो तले उंगली दबा लेते... उनकी आँखें फटी की फटी रह जातीं। स्वामिश्री तो कई बार हँस कर बोलते–

'माणस बधां आ थांभलानां दर्शन करे छे, पण कोई आ साधुनां दर्शन करतां नथी।'

आम लोगों की इसी नब्ज़ को परख कर, प.पू. गुरुजी ने स्वयं अत्यधिक परिश्रम करके ठाकुरजी का ये हॉल ऐसा आकर्षक बनवाया है कि बस देखते ही रहो। एक-दूसरे से हॉल की अनुपम सुंदरता की बातें सुन कर लोग भले ही सिर्फ इसे देखने आएँ, पर अंदर आकर वे गुणातीत स्वरूपों, प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी की मूर्ति के दर्शन तो अवश्य करेंगे और विभिन्न प्रतिमाओं एवं राईटींग्स द्वारा वे अवश्य जानेंगे–

ओहो! गुणातीत समाज और उसके हर केन्द्र के सर्जन की नींव में हैं–'काकाजी'! इतना ही नहीं, श्री अक्षरपुरुषोत्तम संप्रदाय के विकासक्रम में भी प.पू. काकाजी का अनूठा योगदान रहा है! यूँ, प.पू. काकाजी का एक हूबहू 'दर्शन' सभी को होगा।

और... वाकई, हॉल में दर्शन करते ही–वर्षों पहले **पू. दासस्वामिजी** द्वारा प.पू. काकाजी के लिए रचित भजन की पंक्ति —

'पायामां पूरायो छे तुं, महेल भले आलीशान...'

'नींव में हो आप समाए, महल भले दिखें आलीशान...' अपने आप कानों में गूँजने लगती है!

तो आओ, प.पू. गुरुजी द्वारा हमारे लिए किए ऐसे अथक् छुपे परिश्रम को देखते हुए इस अनमोल अवसर पर प.पू. काकाजी से अंतर से प्रार्थना करें–

'मंदिर बनाव्युं आप बिराज्या, करवी शुं आराधना; हृदय मंदिरिये कायम बिराजो, भूलकांनी छे प्रार्थना...'

भगवान श्री स्वामिनारायण–मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी

श्री अक्षरपुरुषोत्तम की सनातन युगल उपासना के आद्यप्रवर्तक

ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज

ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज

गुणातीत समाज के आद्यसर्जक

ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज　　ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज

भगवत्स्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी

भगवत्स्वरूप अक्षरविहारीस्वामिजी

भगवत्स्वरूप जशभाई साहेबजी

भगवत्स्वरूप दिनकरभाई

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी

अनादि महामुक्त सद्गुरु गोपालानंदस्वामिजी

अनादि महामुक्त जागास्वामिजी

अनादि महामुक्त भगतजी महाराज

अनादि महामुक्त श्री कृष्णजी अदा

भगतजी, जागास्वामी और अदाश्री–तीनों गुणातीत स्वरूप थे। हमें एक देशस्थ ज्ञान को ट्रान्सेन्ड करके सर्वदेशीयता में जाना है– अभेददृष्टि और अविरोधवृत्ति ही दृढ़ कर लेनी है।

– गुरुहरि प.पू. काकाजी महाराज

आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज

जिस प्रकार अयोध्यावासी हमारी मर्जी में वर्तते हैं, वैसा तो परमहंस और सांख्ययोगी एवं कर्मयोगी सत्संगी भी हमारी मर्जी में नहीं वर्तते...

अयोध्यावासी तो बहुत विश्वासी हैं। सो, उन्हें जब किसी कार्य का आरंभ करना हो, तो बड़े परमहंस एवं बड़े सत्संगी गृहस्थ से राय लेकर ही उसे करें; किसी एक व्यक्ति के कहे पर नहीं करें।

– भगवान श्री स्वामिनारायण

महाराज ने मुझसे कहा था– *'धर्मकुल में रघुवीरजी जैसा कोई नहीं।'*

उनके जैसा रहन-सहन या स्थिति और कहीं नहीं मिलेगी। उनके त्याग की छटा भी महाराज जैसी ही थी।

रघुवीरजी महाराज की निष्ठा खूब थी, इसीलिए महाराज उनका विशेष रखते थे।

रघुवीरजी महाराज की बदौलत सारा सत्संग समाज सुखी था।

भगवान के पास हमने अरज रखी है कि गय राजा जैसा राजा और रघुवीरजी जैसे दो आचार्य भेजिए, ताकि भगवान भजने के लिए सभी को सहूलियत रहे। सारे वड़ताल में एक रघुवीरजी महाराज ने मुझे पहचाना।

– मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी

आदि आचार्यश्री रघुवीरजी महाराज

धर्मपिता

भक्तिमाता

सभी आरंभों का परित्यागी 'गुणातीत' कहा जाता है।

भगवद्गीता - अ.१४, २५

गौरीशंकर

राधाकृष्ण

सियाराम

भगवत्स्वरूप प्रमुखस्वामिजी महाराज

भगवत्स्वरूप महंतस्वामिजी

जिस संत में बिराजे प्रभु आठों प्रहर, उसे मिली सरकार की मोहर

गुणातीत परंपरा के ज्योतिर्धर आज जब सात समुंदर पार विदेश में

श्री स्वामिनारायण की–श्री अक्षरपुरूषोत्तम की 'युगल उपासना' का ध्वज फहरा रहे हैं, तब आज से करीब 200 वर्ष

पहले 'बोचासण' गाँव में पूज्य काशीदासजी के यहाँ भगवान स्वामिनारायण द्वारा दिए आशीर्वाद –

'यहाँ के तीर्थधाम की ख्याति समुद्र के उस पार भी फैल जाएगी।'

और

श्रीजी के इस वचन को चरितार्थ करने के चक्र को मानो गतिमान करने के लिए,

गुरुहरि योगीजी महाराज ने हे काकाजी! सबसे पहले आपको 1954 की जनवरी में अफ्रीका भेजा

और... आपने वहाँ जो एक प्लॅटफॉर्म तैयार किया, उसकी सहज स्मृति हो जाती है।

इसके बाद भी प.पू. बापा द्वारा की गई विदेश की कल्याण यात्राओं में बापा का माहात्म्य गाने-समझाने,

आप पहले ही पहुँच जाते या उनके साथ जाते।

संस्था द्वारा दूर किए जाने के बाद भी आख़िर तक तकरीबन प्रति वर्ष

आपने यु.के., अमेरिका, श्रीलंका, कुवैत, फ्रांस, जर्मनी, इटली और यूरोप के अन्य देशों में जा-जाकर

कसनी सहते हुए 'आत्मबुद्धि और प्रीति के सत्संग' के बीज बोए।

1978 में तो *'हमारा धर्म विश्वधर्म हुआ'*– कह कर,

अक्षरपुरूषोत्तम के गुणातीतज्ञान वाले सभी संतों, भक्तों एवं मुक्तों को

किसी भी भेदभाव के बिना सर्वदेशीय समझदारी से उठाव लेने का आप अनुरोध करते रहे

और... ऐसी ही अभेददृष्टि एवं अविरोधवृत्ति से, पू. महेन्द्र बापू को साथ में लेकर, सत्संग का विकास करते

प.पू. दिनकरभाई (शिकागो-अमेरिका) जैसे ज्योतिर्धर भी आपने गुणातीत समाज को भेंट दिए।

गुरुहरि योगीजी महाराज की आज्ञा से विदेश की प्रथम कल्याण यात्रा पर (21 जनवरी 1954)

1966 में संस्था द्वारा प.पू. काकाजी एवं प.पू. पप्पाजी को विमुख करने का निर्णय दादर मंदिर में प्रकट करने पर, उनके प्रति लगाव वाले 39 संत, प.पू. महंतस्वामिजी की आज्ञा लेकर इस संदर्भ में प.पू. बापा से केवल मिलने के लिए ही प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी और प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की निश्रा में सोखड़ा गए थे। क्योंकि– तभी विचरण के दौरान प.पू. बापा का सोखड़ा पधारने का कार्यक्रम निश्चित् था, जो कि बाद में रद्द हो गया था। परंतु इस तथ्य को *'संस्था के निर्णय की अवहेलना करने एवं करवाने की नियत से ये संत मंदिर से निकल गए हैं'* – ऐसा ज़ाहिर करते हुए ट्रस्टियों ने उन्हें संस्था से निकाल दिया।

लेकिन, तब निधड़क रूप से प.पू. काकाजी ने संतों को सर्वप्रथम पत्र में ही लिख भेजा –

'फ़िलहाल जो कुछ हो रहा है, होने वाला है वह सब गुरुजी (योगीबापा) की इतनी संपूर्ण जानकारी एवं मर्ज़ी के मुताबिक होता जा रहा है कि आश्चर्यों की नई ही परंपरा सुनने-देखने और अनुभव करने को मिलती रहेगी।

चैतन्य स्वरूपों का नया ही इतिहास रचा जा रहा है – जिसे गुरु भविष्य में स्वर्णाक्षर से लिखवाना चाहते हैं।'

यह थी भविष्य को स्पष्ट रूप से देखती उनकी आर्षदृष्टि!

फिर भी, हे काकाजी! यूँ 39 संतों की जिम्मेदारी अचानक आ तो पड़ी ही।

पर, आप अकसर कहते कि *आई एम ए कॅन्डीड एन्ड नॉट ए शर्कर;* यूँ आपने यह जिम्मेदारी बख़ूबी निभाई।

गुरुहरि योगीजी महाराज के प्रति अनन्यनिष्ठा से जुड़े सोखड़ा के सरपंच श्री डाह्याकाका, चंदुभाई (दाजी), चिमनभाई, शंकरभाई और मगनभाई इत्यादि की उपस्थिति में डाह्याकाका के घर पर, आपने प.पू. बापा की मर्ज़ी को जान कर आए श्री गुलज़ारीलाल नंदाजी से सलाह-मशवरा करके सोखड़ा के पुराने मंदिर में संतों के रहने आदि की व्यवस्था करवाई। संतगण के स्वावलंबी होने तक निर्वाह खर्च के पैसे भी मुंबई से भेजते रहे। थोड़े-थोड़े अंतराल पर सोखड़ा आकर

प.पू. बापा ने प्रसन्न होकर जिस हेतु हमें दूर रखा है , उसका मर्म समझा कर उसे पूर्ण कर लेने एवं सभी अलौकिक भूमिकाओं को चूर-चूर होने देकर भी प.पू. बापा के साथ अखंड आध्यात्मिक संबंध दृढ़ करने के लिए संतों को बल देते हुए , अन्य किसी प्रवृत्ति में प्रेरित न करके भजन और प्रार्थना ही करते रहने की निरंतर प्रेरणा दी और हरिभक्तों का उत्साह भी बढ़ाया।

पू. नंदाजी संतों से मिलने के लिए सोखड़ा आए , तब पू. डाह्याकाका के घर पर (1966)

‘इन संतों से मेरा जो संबंध है , वह तो योगीजी महाराज की वजह से है। योगीजी महाराज को नाराज़ करके मैं कहीं जाऊँ-कुछ करूँ यह तो मैं सोच भी नहीं सकता... स्वामी (बापा) ने स्वयं मुझसे कहा है कि वे चाहते हैं कि संतों के लिए कोई व्यवस्था हो जाए। सो , इस संदर्भ में मुझे अन्य किसी से सबूत की जरूरत नहीं।’ – पू. नंदाजी

समय के गुज़रते संतों के प्रति ग्रामजनों का सद्भाव व लगाव बढ़ा और प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की प्रेरणा से गाँव की बाहरी सीमा पर प.भ. विट्ठलभाई और आत्मीय ग्रामीणों ने मंदिर के लिए भूमिदान किया। प.पू. स्वामिजी तो कई बार कहते– *‘शुरुआत से ही सत्संग में प.पू. काकाजी मेरी प्रेरणामूर्ति रहे हैं।’* अतः , प.पू. काकाजी के प्रति उनके ऐसे पूज्यभाव के वश, पू. कांतिकाका द्वारा दी गई प.पू. काकाजी की प्रासादिक शुभलक्ष्मी रूप भेंट आने के बाद ही प.पू. स्वामिजी ने 1974 की 1 फरवरी को गुणातीत समाज के सभी ज्योतिर्धरों की निश्रा में ‘हरिधाम’ के भव्य मंदिर की शिलान्यास विधि करवाई और... आज हमें भव्यातिभव्य मंदिर का दर्शन हो रहा है।

पहले छाणी गाँव और सोखड़ा के बीच का रास्ता कच्चा होने के कारण बारिश के चार महीने वहाँ आने वाली बसें बंद हो जातीं, सो संस्कृत पढ़ाने के लिए शास्त्रीजी वहाँ आ नहीं सकते थे।

दूसरी ओर, पुराने हाई-वे पर स्थित 'सांकरदा' गाँव–भगवान स्वामिनारायण की महाप्रसादी का तीर्थस्थान–जहाँ श्रीजी महाराज दोनों देश के आचार्यों एवं पाँच सौ परमहंसों के साथ एक रात रूके थे। गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के 'खैबरघाट' सदृश यह गाँव उनके द्वारा गुरुहरि योगीजी महाराज को उपहार के रूप में दिए सात गाँवों में से एक था। प.पू. योगीबापा यहाँ आकर छः-छः महीने रहते। ऐसे महापवित्र और निर्गुण गाँव के हरिभक्त, जिन्होंने किसी भी प्रकार की मुहब्बत या व्यवहार को आड़े न आने देकर, जिस प्रकार गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज एवं गुरुहरि योगीजी महाराज का खुल्लम-खुल्ला पक्ष रखा था, वैसे ही इन एकनिष्ठ शूरवीर हरिभक्तों ने प.पू. काकाजी की महिमायुक्त स्वरूपलक्षी बातों एवं गुरुहरि योगीजी महाराज के प्रति प.पू. काकाजी की निष्ठा की मस्ती से प्रभावित होकर, इन संतों को गाँव के पुराने मंदिर में ठहराने में पूरी तरह सहयोग दिया। इस प्रकार, गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के निर्दोषबुद्धि वाले मंडल के अखंड बने रहे भक्तिभाव की प्रतीति भी हुई!

प.पू. योगीजी महाराज के प्रति संतों की अडिग निष्ठा, साधुता और शुद्ध वर्तन को देख कर वहाँ के सारे मंडल का थोड़े ही समय में संतों के प्रति ऐसा भाव और लगाव हो गया कि उन्होंने गाँव के बाहरी छोर पर, महाप्रसादी की इसी विशाल जगह को मंदिर के लिए अर्पण किया।

और.. प.पू. काकाजी श्री नंदाजी को, ज़मीन दिखाने एवं संतों-हरिभक्तों से मिलवाने के लिए, सांकरदा ले भी आए। तब –

एक है 'संस्था' और एक है 'स्वामी' (योगीजी महाराज)। अपने मन में मैं संस्था और स्वामी (बापा) के बीच में फर्क समझता हूँ। मैं दादुभाई से मिलता हूँ, उनके साथ संबंध रखता हूँ। संस्था को यह बात जँचे या न जँचे–यह संस्था की बात है। मैंने स्वामी से दो-तीन बार पूछा था कि ये जो संत हैं, उनकी व्यवस्था के बारे में आपकी क्या मर्ज़ी है। तो स्वामी ने कहा था कि मैं चाहता हूँ कि व्यवस्था हो जाए और उन्होंने बहुत ही खुशी से आशीर्वाद दिए हैं। यदि उनकी मर्ज़ी नहीं होती, तो मेरा मन भले कितना ही होता, पर मैं यहाँ आ नहीं पाता। आप सब जो इन्हें संभालते हो–इनके लिए व्यवस्था

करते हो—वह मैं मानता हूँ कि योगीजी महाराज की बड़ी सेवा हो रही है।

राजनीति में भी जिन्होंने कभी झूठ नहीं बोला, ऐसे श्री नंदाजी के मुख से यह सुनते ही स्थानीय और अन्य किसी के मन में कोई गलतफ़हमी नहीं रही। प.पू. काकाजी की गज़ब की कुशलता और कार्यदक्षता से थोड़े ही समय में ज़मीन नाम पर हो गई और श्रमशिविर करके शिलान्यासविधि की पूर्व तैयारियाँ तत्काल शुरू करवाई गईं। श्री नंदाजी भी खातमुहूर्त करने के लिए दोबारा सांकरदा आए और सभी के साथ-सहकार से प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की निश्रा में संतों-युवकों ने रात-दिन सतत परिश्रम करके मंदिर के निर्माण का कार्य उठा लिया।

श्री नंदाजी को 'सांकरदा' मंदिर के लिए ज़मीन दिखा करके गाँव में से लौटते (22 अगस्त 1967)

प.पू. काकाजी जैसे कहा करते *'लक्ष्मीजी तो संतों की दासी हैं'*—वे अकसर आते और 'सेवा' लाते रहे। जिन-जिन्होंने प्रेमभाव से छोटी-सी भी सेवा दी, उनसे आत्मीयता का शाश्वत् संबंध स्थापित किया और... 22 **मई** 1968, **योगीजी महाराज की** 77**वीं जन्मजयंती** पर तो श्री नंदाजी एवं गुजरात के तत्कालीन राज्यपाल की हाज़िरी में मंदिर में मूर्तिप्रतिष्ठा हुई!

रहन-सहन, सादगी, नियम-धर्म और सेवा से जूनागढ़ी संतों की झांकी करवाते ये संत आज भी यह बात दोहराते हुए बोल उठते हैं—

'काकाजी ने हमें यह मंदिर बनवा दिया था!'

जब गुरुहरि योगीजी महाराज '**गुणातीत ज्योत**' के निर्माणाधीन भवन को देखने आए (**25 जनवरी 1966**)
तब बोले – *'यह रसोई छोटी तो नहीं पड़ेगी ?'*

हे काकाजी! बहनों के लिए भगवान भजने का मार्ग खोल देने की पहल आपने की और... **'गुणातीत ज्योत'** का सर्जन हुआ।

तत्कालीन रूढ़िवादी समाज के प्रहारों को झेलने के लिए आप 'ज्योत' की ढाल बन कर रहे

और... प.पू. पप्पाजी की छत्रछाया में बहनें दिव्यता के मार्ग पर अग्रसर हुईं।

माया अपना काम करती रही, भगवान ने अपना काम किया।

विरोध खूब हुआ, लेकिन इस कार्य में कोई भी विघ्न आड़े नहीं आया और... बहनों का एक सुंदर कार्य साकार हुआ आज दिखाई देता है।

समर्थ गुणातीत पुरूषों के सिवा बहनों के ऐसे कार्य के लिए अन्य कोई तो कदम उठा ही नहीं सकता।

शायद उठाने भी जाए, तो वह निर्लेप रह ही न सकेगा।

इसीलिए **प.पू. योगीबापा** ने तो स्वमुख से कहा भी था – ***'बहनें दादुभाई की बातें सुनें, इसमें क्या हरजा है?'***

प.पू. प्रमुखस्वामिजी महाराज की हाज़िरी में
गुरुहरि योगीजी महाराज के करकमलों द्वारा
वल्लभ विद्यानगर में 'गुणातीत ज्योत'
के भवन की शिलान्यास विधि (21 जून 1965)
जब उन्होंने आशीर्वाद दिया –
'गुणातीत ज्ञान का संदेश दुनिया में यहाँ से फैलेगा।'

‘युवक मेरा हृदय हैं’ –प.पू. योगीबापा के इस मर्म एवं उनकी योजना और अभिप्राय को जान कर, प.पू. काकाजी युवकों में बहुत ओतप्रोत हो जाते। उन्होंने कई युवकों के निजी जीवन में दिलचस्पी लेकर, उनके कई प्रश्नों को हल करके, उन्हें सत्संग और सेवा के मार्ग पर अग्रसर किया।

विद्यानगर में युवक प्रवृत्ति पू. जशभाई साहेब के नेतृत्व में चलती थी। वहाँ एक विशिष्ट कार्य करने के लिए प.पू. बापा ने ‘विद्यानगर के विश्वकर्मा’ पू. भाईकाका को वचन भी दिया था और... यह कार्य पू. जशभाई साहेब द्वारा हो इस हेतु प.पू. बापा ने उन्हें प.पू. काकाजी की निश्रा भी दे दी।

प.पू. जशभाई साहेब के शब्दों में–

‘वर्षों पहले, 1963-64 में एक बार रात को मैं आणंद मंदिर में प.पू. बापा के पास अपनी कुछ बात करने गया था। तब बापा ने प.पू. काकाजी को बुलवा कर उनके हाथ में मेरा हाथ रखा और बोले–

आज से हम ये जशुभाई साहेब और उनके सारे मंडल को आपको सौंप रहे हैं, उन्हें संभालना।’

प.पू. बापा के इस चरित्र का प.पू. साहेब को कितना अधिक मूल्य होगा, यह उनके निम्न कथन से स्पष्ट है–*तब से मुझे योगीजी महाराज की कृपा से काकाजी के प्रति भी वही प्रेम और भाव हो गया, जो योगीजी महाराज के प्रति था।*

इसके बाद से प.पू. काकाजी भी मुंबई से महीने में दो-तीन बार विद्यानगर जाते और युवकों के साथ हफ्ते-हफ्ते भर रहते। रहने और भोजन आदि की सुविधा नहीं थी; लेकिन, कुछ भी गिने बिना वे जाते रहते और बापा के स्वरूप की अद्भुत बातें करके सभी के हृदय में स्वयं ने तो स्थान लिया ही, साथ ही इससे अनंत गुणा बापा को सभी के हृदय में बिठा दिया।

फिर, प.पू. पप्पाजी के जोग में आने से प.पू. साहेब और उनके साथियों को उनके प्रति भी वैसा ही भाव हो गया। विमुख प्रकरण होने पर प.पू. बापा ने भी प.पू. साहेब को विद्यानगर भेज दिया। प.पू. काकाजी की आज्ञा से प.पू. साहेब और उनके साथी प.पू. पप्पाजी और प.पू. सोनाबा की छत्रछाया में, उनकी प्रेरणा और मार्गदर्शन के मुताबिक, साधना करते रहे और... ‘अनुपम मिशन’ का उद्भव हुआ।

यूँ स्वामिनारायण संप्रदाय में अनोखी छाप छोड़ते ‘निष्काम कर्मयोगी साधुओं’ की नई पंखुड़ी खुली और प.पू. साहेब की निश्रा एवं पू. अश्विनभाई, पू. शांतिभाई, डॉ. सनंदभाई, डॉ. रतिभाई, डॉ.वी.एस., पू. हिम्मतस्वामी जैसे ज्योतिर्धरों

युवक प्रवृत्ति के सूत्रधार प.पू. साहेबजी और उनके साथी प्रगट गुणातीत स्वरूपों के साथ

के नेतृत्व में आज अनेकों नवदीक्षित शिक्षित युवक, 'ब्रह्मज्योति' की तपोभूमि पर, 'गुणातीतभाव' में रहने की तालीम लेते हुए कर्मयोगी बन कर, हमारी हिन्दुसंस्कृति के आध्यात्मिक मूल्य को संभालते हुए आज के वैज्ञानिक युग में सत्पुरुष, सत्शास्त्र और सद्विचार का समन्वय रख कर 'गुणातीत समाज' का गौरव बढ़ा रहे हैं।

दिल्ली में जब 'स्वामिनारायण' के नाम तक से सभी अनजान थे,

तब आपने 1967 की 5 दिसंबर को प.पू. गुरुजी एवं संतों को पहली बार दिल्ली भेजा...

आप स्वयं भी बार-बार आते रहे।

आपकी प्रेरणा और संकल्प से उत्तर भारत में धीरे-धीरे सत्संग फैला

और...

1985 में इस मंदिर के लिए 'दिल्ली विकास प्राधिकरण' द्वारा ज़मीन आवंटन किए जाने की खबर मिलते ही,

विलम्ब किए बिना बैसाखी के दिन साथ वाले जनता फ्लैट्स के पार्क में आपने शिलान्यासविधि करवा दी

एवं 28 मई को ज़मीन का क़ब्ज़ा मिलते ही,

उसी सायं इस भूमि पर स्थानिक संतों-मुक्तों के साथ स्वयं पधारे

और

धुन-भजन करवा कर, पुष्प-वर्षा करके आशिष बरसाए –

'अब गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज और योगीजी के संकल्प से देखते ही देखते सुंदर,

सर्वोत्तम एवं विशाल मंदिर का निर्माण हो जाएगा...

देवी-देवता सामने से आकर इस कार्य को कर जाएंगे...

लेकिन, तुम तो केवल मूर्ति में ही रह कर सभी क्रियाएँ करते जाओ।'

दिल्ली, 28 मई 1985

गुणातीत स्वरूप की पहचान करवाने के लिए गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने, एक प्रोटेस्टन्ट की भाँति, 'वड़ताल' से निकल कर शुद्ध उपासना का प्रवर्तन करते हुए मानवस्वरूप में भगवान के अखंड प्राकट्य का 'गुणातीत ज्ञान' खुला रख दिया। कई नए मुक्त तो जानते ही नहीं होंगे कि ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज के अंतर्धान होने के बाद श्री अक्षरपुरूषोत्तम की – 'प्रगट की उपासना' को व्यापक बनाने का श्रेय तो प.पू. काकाजी को जाता है, क्योंकि उन्होंने ही प्रगट गुणातीत स्वरूप योगीजी महाराज की पहचान करवाई। इतना ही नहीं, प.पू. पप्पाजी के साथ पू. कांतिकाका के कुटुंब के सहयोग से 'आत्मबुद्धि और प्रीति' के सत्संग की सूझ दी और प.पू. बापा के संबंध वाले भक्तों में ताड़देव से सुहृद्भाव और निर्दोषबुद्धि के पूर बहाए। वर्ना, इससे पहले तो मुंबई में 'गुणबुद्धि वाला' आयाराम-गयाराम का ही सत्संग चलता था।

इसी हेतु तो 1945 में प.पू. काकाजी के पढ़ाई पूरी कर लेने पर गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज उन्हें अपने साथ नड़ियाद से 'सारंगपुर मंदिर' के दर्शन करवाने ले गए और... वहाँ उन्हें नौकरी के लिए लंदन जाने को मना किया तथा देश में ही सत्संग के योग में रहने की आज्ञा दी थी न!

सो, 'मुंबई में गुणातीत ज्ञान के सत्संग का विकास' और 'ब्रह्मस्वरूप काकाजी' – इन दोनों को कभी कोई अलग नहीं कर पाएगा। तभी तो गुरुहरि योगीजी महाराज ने स्वमुख से कहा था – *'ताड़देव यानि अक्षरधाम का तख़्त!'*

भगवान, संत और सत्संगी को ही जीव के सच्चे सगे मान कर जीने का उठाव सर्वप्रथम प.पू. काकाजी ने लिया और गुरुहरि योगीजी महाराज की प्रसन्नता के लिए प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी की निश्रा में, 'दादुभाई वाले' कहे जाते, समग्र ताड़देव मंडल ने ऐसे अनमोल भाव से सभी की सेवा की है।

ताड़देव यानि संपूर्ण अक्षरपुरूषोत्तम संस्था के देश-विदेश के हरिभक्तों का मानो पीहर ही! सभी वहाँ आकर ठहरते। अफ्रीका से देश में आते-जाते एवं शादी या व्यापार के लिए खरीदारी करने गाँव से आते मुक्त – ये सभी ताड़देव ही आते और ठहरते। प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. महंतस्वामिजी, प.पू. डॉक्टरस्वामिजी जैसे गुणातीत ज्ञान के आज के ज्योतिर्धर जब युवा थे, तब प.पू. योगीबापा उन्हें प.पू. काकाजी का समागम करने के लिए मुंबई भेजते थे। वहाँ हर एक की अपनेपन के भाव से ख़ातिर होती। बीमारों के लिए तो मानो वह रुग्णालय ही हो, यूँ वहाँ पर संस्था के कई बीमार संतों-हरिभक्तों की अलौकिकभाव से तीमारदारी भी होती। ताड़देव की सीढ़ियों से चौबीस घंटे पराभक्ति ही बहती रही है। तभी तो प.पू. योगीबापा बोले थे – 'बलिराजा के दरवाजे पर आज तक प्रभु जैसे पहरा देते हैं, वैसे ही दादुभाई ने शास्त्रीजी महाराज को बांध लिया है।'

शुरूआत से ही शास्त्रीजी महाराज पू. कांतिकाका के घर को अपना घर मानते थे। उस घर पर मानो उनका निजी अधिकार रहता था।

1952 से – साक्षात्कार से लेकर जब तक श्री अक्षरपुरूषोत्तम संस्था ने प.पू. काकाजी को विमुख नहीं किया, तब तक संस्था की ऐसी एक भी प्रवृत्ति नहीं थी, जिसका प्रारंभ प.पू. काकाजी द्वारा न करवाया गया हो या उन्हें आगे न रखा हो। संस्था की सभी प्रवृत्तियों के संचालन का मानो वे केन्द्र थे!

* गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज द्वारा प.पू. प्रमुखस्वामिजी को दिए वचन को पूरा करने के लिए, 1953 में गुरुहरि योगीजी महाराज ने **'यात्रा प्रवास'** के लिए जो **स्पेश्यल ट्रेन** निकाली थी, उसका आयोजन प.पू. काकाजी की **'एग्री ओरियन्ट इन्डस्ट्रीज़'** से ही हुआ था।
* प.पू. योगीबापा और प.पू. काकाजी का संबंध देख कर, सत्संग में बड़े गिने जाने वाले प.भ. छगनभाई, प.भ. मणीभाई सलाडवाला आदि तो प.पू. काकाजी को तब **'छोटा योगी'** ही कहते।
* 1955 में अफ्रीका जाते समय सत्संग के हर एक गाँव को सप्ताह में एक पत्र लिखने की प.पू. योगीबापा ने प.पू. काकाजी को आज्ञा दी थी। अफ्रीका की उस यात्रा से लौटने के बाद भी इस सेवा को जारी रखने के लिए उनसे कहा और... दादर मंदिर के संत जब तक सक्रिय नहीं हुए, तब तक **'स्वामिनारायण सत्संग पत्रिका'** के रूप में भी ताड़देव से ही प.पू. काकाजी द्वारा उसका प्रकाशन होता रहा था।

'अक्षरधाम के तख़्त पर विराजमान प.पू. काकाजी'

* 1954 से 1961 के दौरान तो सायं मुंबई के उपनगरों में जा-जाकर, सभाएँ करके, प.पू. काकाजी ने सब में सच्चे सत्संग की जागृति ला दी। तभी तो 1954 में प.पू. योगीबापा ने एक पत्र में स्वयं लिखा – *'मुंबई का और ही रंग है जिसे देख कर लोगों पर प्रभाव पड़ता है। यह सब, दादुभाई! आपने स्वामी को रखें हैं, उसका प्रताप है।'* इसके अलावा एक और पत्र में भी लिखा था – *मुंबई का माहौल खराब था, तब संप, सुहृद्‌भाव और एकता का आपने जो कलश चढ़ाया, उससे मेरे अंतर में ठंडक हो गई। आपने कसनी बहुत सही, वह 'स्वामी' की आप पर प्रसन्नता है।*

यूँ, योगीबापा के संकल्प का मूर्तिमान क्रियास्वरूप यानि – काकाजी!

1966 में संस्था द्वारा विमुख किए जाने के बाद भी 'निर्दोषबुद्धि और सुहृद्‌भाव' के सिद्धांत पर समग्र **'योगी परिवार'** की वे परवरिश करते रहे और ताड़देव में नवयोगेश्वरों का एक मंडल खड़ा कर दिया। 1986 में प.पू. काकाजी के अंतर्धान होने के बाद, इन नवयोगेश्वरों ने पवई की प्रासादिक भूमि पर **'अक्षरधाम'** का सर्जन किया और आज प.पू. दिनकरभाई के मार्गदर्शन एवं पू. भरतभाई-पू. वशीभाई के नेतृत्व में प.पू. काकाजी के नक़्शेकदम पर चलते रह कर, सारे 'योगी परिवार' को हरा-भरा रख रहे हैं।

28 मई 1985 के महामगंलकारी दिन ही प.पू. काकाजी ने मंदिर-परिसर में लगे हुए जामुन के पेड़ पर भी तिलक किया और प.पू. गुरुजी को आशीर्वाद दिया–

'यहाँ का मंडल तुम्हारा खूब साथ देगा...

गुणातीतज्ञान का संदेश दिल्ली से भी विश्व में फैलेगा–ऐसे शुभाशीष हैं।

शर्त सिर्फ–

सद्भाव और सुहृद्भाव की है। जोड़ में काम करने की है।'

साथ ही, 1980 में उन्हें दिए निम्न आशीर्वचन की मर्म में स्मृति कराई–

'तुम्हें अब मैं स्वतंत्रता देता हूँ; मुझे भी मत पूछो।

तुम्हारे हृदय में प्रभु हैं, अखंड हैं... तुम लायक हो–पात्र हो...

कितना ही मान मिले, पर वो बापा का है–उनके संकल्प का है,

इसी भावना के साथ

हरिप्रसादजी, पप्पाजी और काकाजी को आगे रख कर –

तुम जब भी पुकार करोगे, तो भगवान तुम्हारा भी सुनेंगे।

अब से तुम भी स्वतंत्र काम करो, मिलजुल कर करो...'

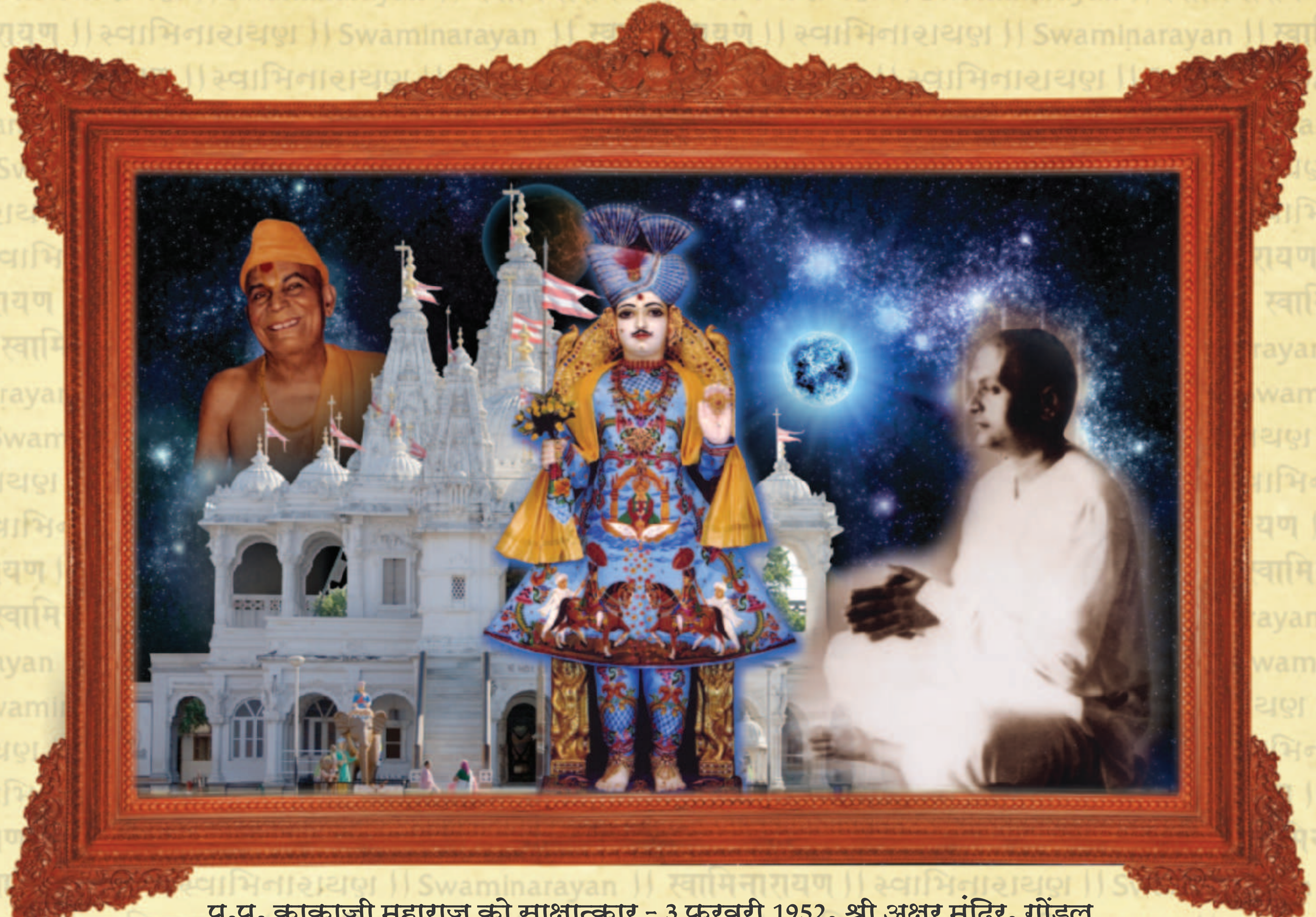

प.पू. काकाजी महाराज को साक्षात्कार - 3 फरवरी 1952, श्री अक्षर मंदिर, गोंडल

...छगनभाई, दादुभाई, राजकोट मंडल–सभी अक्षरदेरी में भजन कर रहे थे। दादुभाई को घनश्याम महाराज की मूर्ति का लक्ष्य हुआ और शुभ आशीर्वाद दिए। शास्त्रीजी महाराज की कृपा से (दादुभाई को) अक्षरदेरी में तीन दिन साक्षात् महाराज के दर्शन हुए।

रात को आरती हो चुकी थी और दादुभाई घनश्याम महाराज की मूर्ति को एकचित्त से लगातार देखते रहे। आधा घंटा एक टक दृष्टि से दर्शन किए और उन्हें एकदम 'लक्ष्य' हो गया! आँख की वृत्ति मूर्ति में जुड़ गई; वे स्थिर हो गए। हम सभी पास ही थे। (उनका) देह काष्ठवत् हो गया। (वे) अक्षरधाम में दर्शन करने लगे। तत्पश्चात् सभी ने उन्हें सभामंडप में ही सुला दिया, पर वे उठे ही नहीं; फिर सुबह जबर्दस्ती नहलाया। लेकिन, (उनका) 'लक्ष्य' मूर्ति की ओर ही था। दो दिन 'लक्ष्य' रहा। खाया नहीं, पिया नहीं। एकतार वृत्ति जुड़ गई। फिर दो दिन के बाद महाराज ने जगाया और तब उन्हें होश आया...

इस प्रकार घनश्याम महाराज (उन्हें) अक्षरधाम में ले गए। दो दिन तक अपने पास रख कर सुख दिया। उसी के प्रताप से दादुभाई के जीवन में परम शांति हो गई; व्यवहार की भागदौड़ बंद हो गई; व्यवहार में वृत्ति गौण हो गई और वे ज्ञान से परिपूर्ण हो गए।

– ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज (श्री अक्षरतीर्थ, प्रथम आवृत्ति–पृ. 122, 123)

साक्षात्कार के बाद– *'योगीजी महाराज प्रभु का स्वरूप हैं; देह छोड़ कर-कोटि यज्ञ, कोटि व्रत करके जिस प्रभु की प्राप्ति करनी है , वही प्रभु योगीजी महाराज के रूप में हमें मिले हैं'*–इस तथ्य का प.पू. काकाजी ने जब जोर-शोर से बिगुल बजाया, तो सत्संग में खलबली मच गई। *'योगीजी महाराज अच्छे साधु हैं, सच्चे संत हैं'*–इस बात को तो तत्कालीन सारा समाज मानता था, परंतु यह तो बिल्कुल नई बात थी। यूँ , योगीजी महाराज की ऐसी सम्यक् पहचान प.पू. काकाजी ने दी और... सत्संग में एक नवयुग का उदय हुआ!

गोंडल में 1965 की शरद्पूर्णिमा के दिन भागवती दीक्षा लेने के बाद प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी 'अन्नकूट' उत्सव तक वहीं रुके थे; इस दौरान हे काकाजी! आपने उन्हें असली गुणातीत रीति-नीति और स्थिति का मर्म बताते हुए सूचन किया–

'अब आप मुंबई जाओगे; वहाँ हम से प्रीति वाला मंडल है। वे आपको आगे करेंगे... लेकिन आप महंत को ही आगे रखना... हमेशा नंबर 'टु' ही रहना।'

मुंबई – सूर्यनारायण की 'वाड़ी' में, 22 अगस्त 1949

शक्तिस्वरूपीणी प.पू. सोनाबा की प्रेरणा से प.पू. काकाजी एवं पू. कांतिकाका ने 'स्वामी की बातें' का पारायण कराने की मौके की सेवा जो लूट ली, उसके फलस्वरूप एवं पू. सोनाबा के तीव्र संकल्प को पकड़ कर गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने इन दोनों के सिर पास-पास लाकर परभाव में कहा –

'आज से तुम दोनों 'भाई-भाई' बन कर रहना। कैसे भी संजोग बनें, लेकिन कभी अलग नहीं होना... ब्रह्मांड डोलाओगे।'

इस आशीर्वचन की स्मृति करवाते हुए प.पू. काकाजी भी कई बार दोहराते –

'35-37 वर्ष से हम और कांतिभाई, शास्त्रीजी महाराज के वचन से, राम-लक्ष्मण के भ्रातृभाव को भी भुला दें, ऐसे रहे न!'

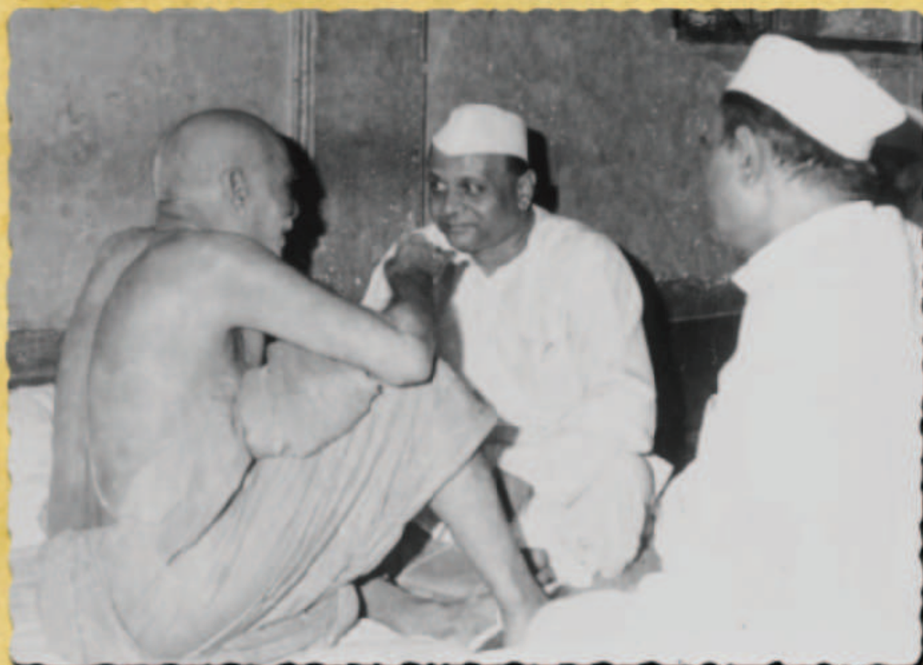

'पुरुषों की भाँति स्त्रियाँ भी आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत रख कर स्वतंत्र रूप से भगवान भज सकती हैं' – अपनी इस क्रांतिकारी विचारधारा को कार्यान्वित करवाने के लिए गुरुहरि योगीजी महाराज मानो अक्षरधाम से ही प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी को अपने साथ लाए थे। इन दोनों भाइयों के युगकार्य से, स्वयं का तेजोवध होता महसूस करते संस्था के पुराने कार्यकर्ताओं के रोष का इशारा देते हुए मुंबई में प.पू. बापा ने इस बंधुजोड़ी को 1965 के मार्च में कहा –

'अब तुम दोनों मिल कर जो करोगे, उसमें मैं आ गया ; मुझसे पूछने मत आना। जाओ, बजाओ डंका।'

1967 में मुझे पहली बार दिल्ली आना तय हुआ तब से वडोदरा में अक्षरनिवासी भीखाकाका के घर पर, प.पू. काकाजी मुझे जब-जब मिलते, उस दौरान निम्न बातें करते–

'...मैं तुझे कोई अपने मन से नहीं भेज रहा; योगीजी महाराज का संकल्प है कि सत्संग का वहाँ विकास हो–स्वामिनारायण का संदेशा व्यापक बने, इसीलिए बापा के प्रति की भक्ति समझ कर तुम्हें भेज रहा हूँ।'

और... सत्संग के विकास के लिए उन्होंने मुझे पाँच-छः मुद्दे बताए थे–

❖ *प्रगट की अक्षरपुरुषोत्तम की हमारी उपासना है। स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज इसीलिए वड़ताल से निकले थे। हमें इसी को फैलाना है। सो, 'काकाजी-काकाजी' नहीं किया करना। 'योगीजी महाराज' आज अक्षर और पुरुषोत्तम–स्वामी और महाराज का प्रगट स्वरूप हैं; हमारी उपास्यमूर्ति हैं। उन्हें ही आगे रख कर सत्संग की बातें करना। महाराज और स्वामी गौण नहीं होने चाहिएँ, यह भी 'प्रगट की उपासना' का एक मर्म है।*

❖ *'सुहृद्भाव' हमारी बुनियाद है। किसी भी वजह से संतों-भक्तों के साथ का आपसी सुहृद्भाव खंडित नहीं होने देना।*

❖ *अपने नियम-मर्यादा-स्वधर्म में रह कर ही वहाँ वर्तना। आप 'त्यागी' हो, सो स्त्री-धन के त्याग का नियम तुम्हें हर हाल में पकड़े रखना है।*

❖ *वहाँ कभी भी किसी से कुछ माँगना-करना नहीं। तुम तो सम्राट के राजपुत्र! तुम्हें माँगना क्यों पड़े? सत्संग के विकास के लिए तुम्हारी जरुरतें*

भारत साधु समाज - दिल्ली, अक्तु. 1972

महाराज-बापा पूरी करेंगे ही और फिर भी... कुछ खूँटता ही लगे, तो काकाजी तो हैं ही!

❖ *तुम्हारे संपर्क में जो भी आएं और अपनेपन से–आत्मीयता से जुड़े हुए हों, उनके साथ कभी भी 'व्यावहारिक बुद्धि' नहीं रखना। उनके साथ कोई रिज़र्वेशन्स नहीं रखना।*

हमें 'आत्मबुद्धि और प्रीति' का सत्संग फैलाना है। ऐसा सत्संग जितना बढ़ेगा, उतना ही सत्संग का विकास हुआ माना जाएगा। सो, यही ध्येय रखना।

❖ *एक और बात का खूब ध्यान रखना– तुम्हें कोई भी बहन भेंट भेजे-करे और वह शादीशुदा हो, तो अपने हस्बन्ड से पूछ कर ही वह लाए-दे। कुंवारी हो, तो अपने पेरन्ट्स से और पेरन्ट्स न हों, तो अपने बड़े भाई से–गार्डियन से पूछ कर तुम्हें दे। लेकिन यदि वह इनसे छिपा करके लायी हो और कहे– 'मेरे हस्बन्ड को पसंद नहीं आएगा, ये तो मेरा है–मेरे मायके का है' आदि; ऐसी भेंट को कभी एक्सेप्ट नहीं करना।*

मेरी इन बातों को पकड़े रखना। तो, सत्संग तुम्हारे इर्दगिर्द अपने-आप बढ़ता रहेगा... तुम्हारे द्वारा सभी को शांति-आनंद-प्रेम का एहसास हो, ऐसा तुम्हें बापा बनाएंगे।

और...1985 मई 28 की रात को इसी संदर्भ में ऐसे दो और सूचन भी किए–

❖ *कभी भी डाईरॅक्ट या इनडाईरॅक्ट कॉमर्शियल ऍटीट्यूड से काम नहीं करना।*

❖ *ऑल्वेज़ बी लो-प्रोफाईल।*

– प.पू. गुरुजी

1966 में मा. गुलज़ारीलाल नंदा साहेब के आवास पर चर्चा करते
[5, तुगलक रोड, नई दिल्ली]

प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी के प्रति आदरभाव व लगाव होने के एक मात्र कारण से 1966 में संस्था ने 39 संतों को यकायक निकाल दिया, इससे माननीय नंदाजी बहुत विक्षुब्ध थे। अतः, इस बारे में हक़ीक़त को जानने के लिए उन्होंने प.पू. काकाजी को दिल्ली बुलाया। तब बातचीत के दौरान श्री चंद्रभान शर्माजी ने अपनी प्राकृत बुद्धि से कहा–

लालाजी, यह सब सिर्फ दो-तीन जनों की ही झंझट के कारण है। इन दो-तीन जनों को DIR के अंतर्गत 'अंदर' करवा दो; सारा मामला सुलट जाएगा।

श्री नंदाजी तो उस समय केन्द्र में गृहमंत्री थे!

दो मिनिट तक तो वे सोचते रहे, फिर बोले– *दादुभाईजी अगर कहते हैं, तो ऐसा कर लेते हैं।*

लेकिन, प.पू. काकाजी तो अखंड आध्यात्मिक भूमिका में रहने वाले! वे भलीभाँति जानते थे कि यह तो बापा की ही योजना है और... एक एलीवेटेड-एडवान्स्ड चैतन्यों का समाज उन्होंने अलग किया है। सो, यह सुनते ही वे तुरंत बोले–

लालाजी, हमारी लड़ाई भगवान के साथ है। इनसे लड़ने के लिए हमारे साधन भी शुद्ध होने चाहिएँ। हम भजन से लड़ेंगे!

यह बात जब मैंने सुनी तो मेरे गले उतरी नहीं कि पू. नंदाजी ऐसा करने के लिए कैसे तैयार हो गए? पू. नंदाजी तो सत्त्वगुणी व्यक्ति! राजनीति में भी जिन्होंने कभी गलत कदम न उठाया हो, वे भला इस संदर्भ में ऐसा गलत कदम उठाने के लिए कैसे तैयार हो जाएँ? बाद में जब मेरा दिल्ली आना हुआ, तब पू. नंदाजी से मिलने-करने का सहज ही लगा रहता था।

एक बार मौका देख कर मैंने उनसे पूछा– *साहेब! आपने ऐसा कहा था?*

तब पू. नंदाजी बोले–*हाँ, मैंने ऐसा कहा था!*

उनके मुँह से यह सुन कर मैंने एकदम आश्चर्य से पूछा–*साहेब! इसे तो सत्ता का दुरुपयोग कहा जाए और आप इसके लिए तैयार हो गए!*

तब पू. नंदाजी ने उत्तर दिया–*एक तो यह कि–शास्त्रीजी महाराज ने मुझसे कहा था कि तुम्हें हमेशा दादुभाई का पक्ष रखना है और दूसरी बात, मुझे पूर्ण विश्वास था कि दादुभाई ऐसा गलत कदम उठाने की सम्मति देंगे ही नहीं!!*

– प.पू. गुरुजी

'पंजा एक'–ऐसा तुम पाँच संतों (स्नेहलमंडल)* को दृढ़ कराना है। इस मुद्दे के काम में मेरा साथ देना। हमें अखंड अक्षरधाम में ही रहना है। जो फर्क रखेगा, उसे अंत में परेशानी रहेगी ही।

– गुरुहरि काकाजी महाराज

[* बाएँ से – पू. दासस्वामी, पू. शास्त्रीस्वामी, पू. कोठारीस्वामी, पू. गुरुजी एवं पू. प्रेमस्वामी।]

* दिनकरभाई सात हज़ार मील दूर हैं, लेकिन वे मेरे पास हैं
  और
  तुम मेरे पास हो, फिर भी दूर हो।

* दिनकरभाई जैसे पाँच तैयार हो जाएं, तो मैं मानूँगा कि पूरे अमेरिका को सत्संग हो गया।

मेरे जीवन के 4 HAPPIEST DAYS—

1. ★ 6 अप्रैल 1950 – जब 'गढडा' के टीले पर संगमरमर के मंदिर निर्माण हेतु हमसे ली 51 हज़ार की असाधारण सेवा की प्रसन्नता व्यक्त करते हुए, पू. भगतजी महाराज की भाँति, प.पू. शास्त्रीजी महाराज ने, मुंबई में श्री नंदाजी की कोठी में, चंदन से लिप्त होकर हमें (मुझे, कांतिभाई को और छगनभाई को) गले लगाया।
2. 3 फरवरी 1952 – जब प.पू. बापा के वचन से प्रगट के संबंध वाले श्री नंदाजी के लिए खूब फलता-फूलता व्यापार और ऑफिस को छोड़ कर, स्नेही-स्वजनों को भी उस सेवा में लगा कर उन्हें चुनाव में विजयी बनाने में निमित्त बनने के कारण प.पू. बापा ने गोंडल–अक्षरमंदिर में सतत 72 घंटे तक, मेरी चेतना को स्थूल शरीर से अलग करके गौलोक, वैकुंठ, बद्रिकाश्रम, श्वेतद्वीप जैसी चैतन्यभूमिकाओं का तत्त्वदर्शन करवा कर ब्रह्म-परब्रह्म के दिव्य स्वरूपों की अपरोक्षानुभूति कराई। अक्षरधाम की परात्परता और असली नारायण का 'दर्शन' कराया और गुणातीतभावना अमर एवं अखंडित रही है–इस तथ्य की दृढ़ता कराई।
3. 31 जनवरी 1954 – भरत (यानि–पू. भरतभाई, पवई मंदिर) का जन्मदिन!
4. 28 मई 1966 – जब संस्था ने हमें 'विमुख' किया। प.पू. बापा को हमारा कैसा और कितना भरोसा होगा?

– गुरुहरि काकाजी महाराज

★ इस प्रसंग की गरिमा बता कर, भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए प.भ. हर्षदराय त्रि. दवे ने ब्रह्मस्वरूप स्वामीश्री शास्त्रीजी महाराज के जीवनचरित्र में स्वयं लिखा है– *'...गढपुर तो श्रीजी का सर्वोत्तम स्थान! उसकी सर्वोपरि सेवा तो जो खूब भाग्यशाली हो और स्वामीश्री की अनूठी कृपा का अधिकारी हो, उसे ही मिलती है। स्वामीश्री को वह सेवा आज मुक्तराज दादुभाई, कांतिभाई तथा छगनभाई को देनी थी... स्वामीश्री ने गढपुर की अद्भुत सेवा की अनन्य प्रसन्नता का फल इन महामुक्तों को दिया। सत्संग के इतिहास में अनन्य निष्ठावाले ऐसे भक्तों का, अपने ईष्टदेव के प्रति भक्ति अदा करने का यह अनूठा प्रसंग, प्रेमलक्षणा भक्ति के प्रकरण में सदैव प्रेरणा का दिव्य पान कराते हुए चिर:स्मरणीय रहेगा।'* (प्रथम आवृत्ति–भा. 2, पृ. 347-349)

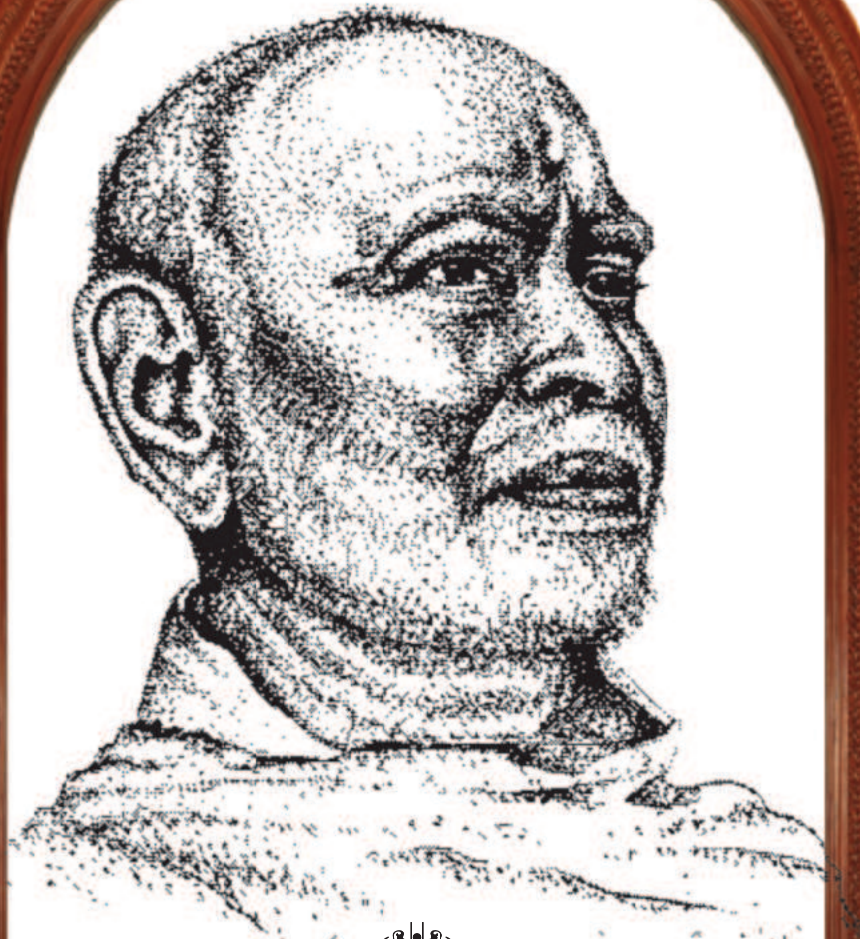

ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज

ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज

मंगलमूर्ति गणपति देव

कष्टभंजन हनुमानजी

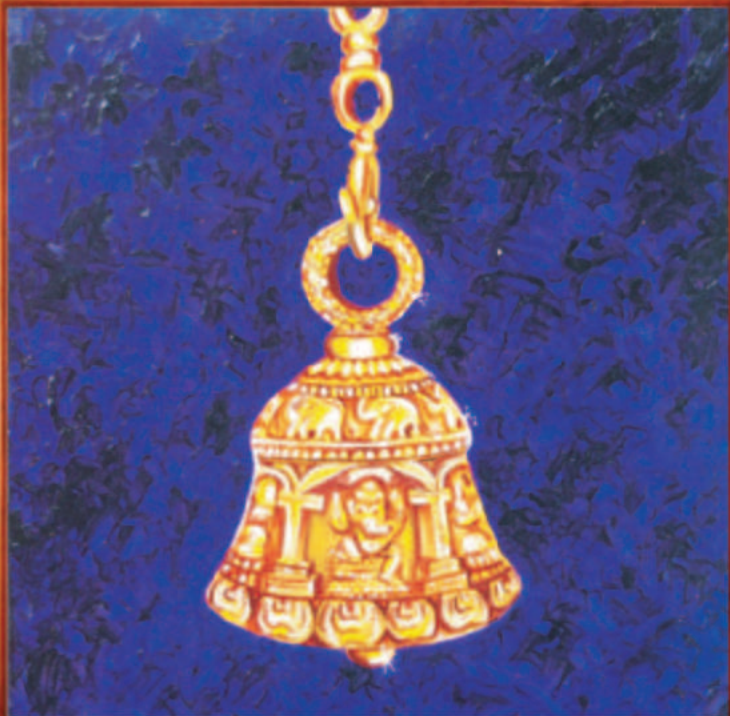

घंट

सुदर्शन चक्र

दीया

सहस्त्रदल कमल

सूर्य-चंद्र

कामधेनु

स्वस्तिक

श्रीयंत्र

कालचक्र

त्रिशूल

रुद्राक्ष

शिवलिंग

ॐ

श्री

मोर

चरणारविंद

गदा

कलश

पाँचजन्य शंख

ध्वजा

गुणातीत समाज

योगी डिवाईन सोसाईटी

अक्षरज्योति

गुणातीत ज्योत

अनुपम मिशन

श्री अक्षरपुरुषोत्तम सत्संग केन्द्र, सांकरदा

आप यहाँ आए हो न ? बस, इतना ही काफ़ी है; यही योग्यता है। अब आप बेफ़िक्र हो जाइए।

कठिनाइयों में हम अपने सोच-विचार छोड़ कर, प्रभु को ही उपायभूत होने दें। 'सतत मंत्रजाप', यानि 'धुन' हर समस्या को हल करेगी ही।

माहौल, परिस्थिति या हक़ीक़त को गिने बिना, अपनी 'निष्ठा' के बलबूते पर कदम उठाओ।

हमारी 'निष्ठा' है–'प्रभु प्रगट हैं, सर्वोपरि हैं, हितकारी हैं, मंगलकारी हैं, पल में चाहें सो कर सकते हैं और वे हमारे हैं।' सो, वे हमारा अहित होने ही नहीं देंगे।

अक्षरतीर्थ

'जहाँ-जहाँ नज़र मेरी ठहरी, याद भरी वहाँ आपकी'–कवि कलापी की इस पंक्ति के मुताबिक काकामय प.पू. गुरुजी के सभी प्रयास सब कुछ प.पू. काकाजी महाराज की स्मृति से भर देने के रहे हैं। सो ही, प.पू. गुरुजी ने 26 अक्तुबर 1992 अन्नकूट के मंगलकारी दिन ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी के वरद् हस्तों से ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का अस्थि कुंभ मंदिर के पीछे बनाई पुष्पसमाधि 'अक्षरतीर्थ' में स्थापित करवाया। तब ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज ने आशिष भी दिए–*गुणातीत समाज के आद्य सर्जक, प्रणेता और प्राणाधार ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी यहाँ विराजमान हैं।*

ऐसे प्रभुधारक विभूतियों की वाणी सत्य स्वरूप है। उत्तर भारत के मुक्तों के लिए ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज यहाँ प्रगट हैं। अनेकों मुक्त यहाँ पर जो भी शुभ संकल्प करते हैं, वे सिद्ध होते ही हैं। माणावदर में बनी 'देरी' को प.पू. योगीबापा ने 'अक्षरदेरी' का स्थान दे दिया था; यूँ **ब्रह्मस्वरूपिणी ज्योति बहन ने इस पुष्पसमाधि को 'हम सब के लिए यह अक्षरदेरी है'** यूँ कह कर नवाज़ा है।

21 जनवरी 1995 को ब्रह्मस्वरूपिणी सोनाबा के अंतर्धान होने के बाद, प.पू. गुरुजी ने उनका अस्थिकुंभ भी 'अक्षरतीर्थ' में स्थापित किया और... ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज के स्वधामगमन के उपरांत, 11 जुलाई 2006–गुरुपूर्णिमा के मंगलकारी दिन, उनका अस्थिकुंभ भी वहीं स्थापित करके प.पू. गुरुजी ने अपने अंतर की भावना को व्यक्त किया कि– जिस प्रकार श्री अक्षरपुरुषोत्तम उपासना के प्रवर्तक ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज व ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज को हम से भुलाया नहीं जा सकता, उसी प्रकार 'गुणातीत समाज के सर्जक' ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज व ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज को भी कभी भुलाया नहीं जा सकेगा।

दरअसल, प.पू. गुरुजी की आंतरिक इच्छा हमेशा यही रही है कि संस्था की मूल विभूतियों को कभी भी हम गौण न करें। इसी हेतु से **30 मार्च 2003** को, ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की स्मृति में, जब भारत सरकार द्वारा डाक टिकिट जारी की गई थी तब, उन्होंने 'अक्षरतीर्थ' में एक शिलालेख* स्थापित करवाया। इस मंदिर की स्थापना कैसे और कब हुई, यह सब विस्तृत रूप से उसमें लिखवा दिया है। इन सभी चेष्टाओं के पीछे प.पू. गुरुजी का यही उद्यम है कि भविष्य में गुणातीत समाज के इन सर्जकों के नाम को विस्मृत करने या करवाने की कोई कल्पना भी न करे। आज हमारा जो कुछ अस्तित्व है, वह उन्हीं की बदौलत है।

---

* शिलालेख पर लिखित दिल्ली मंदिर का इतिहास पृष्ठ ९० पर पढ़िए।

काका तेरी कुर्बानी शब्दों में न समाए, इतिहास गुणातीत समाज का तुम बिन लिखा न जाए...

★ हे काकाजी, अमर रहो !

मुंबई में डाभोलकर रोड पर 1948 में ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज ने दिल्ली आ रहे सत्संगीबंधु श्री गुलज़ारीलाल नंदाजी को अपने एवं गुरुवर्य योगीजी महाराज के बीच बिठा कर अंतर से आशीर्वाद दिया–

‘दिल्ली जाओ, स्वामिनारायण का संदेशा फैलाना। महाराज जैसे हमारा मानते हैं, वैसे ही इस संत के समागम के फलस्वरूप तुम्हारा भी जरूर सुनेंगे...’

और... इस प्रकार दिल्ली और पंजाब में भगवान स्वामिनरायण का संदेशा नंदाजी द्वारा फैले और व्यापक बने एवं ऐसा सत्संग दृढ़ करके दूसरों को भी करवाते रहें, इसी अभिलाषा के साथ उन्हें भेजा था। संयोगवश, उसमें काफी समय निकल गया, लेकिन साक्षात् पुरुषों का वह संकल्प मूर्त करने के लिए तत्स्वरूप प.पू. काकाजी ने प.पू. गुरुजी व संतों को 1967 की 5 दिसंबर को पहली बार दिल्ली भेजा।

दिल्ली आते समय प.पू. काकाजी ने वडोदरा में पू. भीखाकाका के घर पर प.पू. गुरुजी को कहा था—

‘यह तुम्हें मैं नहीं भेज रहा, बापा का संकल्प है और तुम्हें इसमें निमित्त बनना है। बापा आगे-आगे सब सुविधा करते जाएंगे।’

और... 1969 के नवंबर में तो ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज ने गोंडल में, लगातार दस दिन तक, दिल्ली में मंदिर बनाने की रट लगाए रखी–

शिखरबद्ध मंदिर हो तो अच्छा... यमुनाजी को सेवा चाहिए होगी तो होगा... दिल्ली में चौरासी बंदरगाह की ध्वजा फरकती है। (वहां) मंदिर हो तो शोभा खूब बढ़ेगी।

17.11.1969

दिल्ली में मंदिर करना ही है। (हमें) शास्त्रीजी महाराज को (वहां) पधराना है। हमारी तो इच्छा है ही, आगे सबकी जैसी इच्छा!

20.11.1969

दिल्ली में मंदिर शीघ्र करो। (हमें) शास्त्रीजी महाराज को (वहां) बिठा देना है।

23.11.1969

–ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री योगीजी महाराज (योगीचरितम् - पृ. 173)

गुरुवर्य प.पू. योगीजी महाराज और गुरुहरि प.पू. काकाजी एक-दूसरे के कैसे अंतर्यामी-कैसा ऐक्य!

दिल्ली आते प.पू. गुरुजी को आशीर्वाद देते हुए प.पू. काकाजी भी बोले थे–

‘इस अभिप्राय की भक्ति के फलस्वरूप बापा तुम्हें ऐसी साधुता देंगे कि तुम्हारे इर्द-गिर्द समाज अपने आप बढ़ता जाएगा।’

प.पू. काकाजी की पारदर्शी दृष्टि तो भविष्य को देख रही थी ना?

यूं 1967 में प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी एवं प.पू. साहेब के आशीर्वाद लेकर प.पू. गुरुजी दिल्ली आए। उस समय दिल्ली में सत्संग प्रचार के लिए तो कोई प्लॅटफॉर्म ही नहीं था। यहां ‘स्वामिनारायण धर्म’ का नाम तक कोई नहीं जानता था। हर प्रकार से कसनी थी। पर, प.पू. काकाजी की बलभरी कथावार्ता व परिश्रम को देखते हुए अनेक टीका-चर्चाओं, कठिनाइयों, विपरीत परिस्थितियों के बावजूद प.पू. गुरुजी हर साल दिल्ली आते रहे। 1974 तक ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज के लाड़ले व प.पू. काकाजी के सखास्वरूप भारतरत्न, अक्षरनिवासी भूतपूर्व केंद्रीय गृहमंत्री माननीय

श्री गुलज़ारीलाल नंदाजी की सिफ़ारिश से 'भारत साधु समाज' में ठहर कर, अपनी साधना एवं सत्संग का प्रचार-प्रसार करते रहे। 1974 में प.पू. काकाजी के आदेश से संत मंडल ने यहां अशोकविहार-III में किराए की कोठी में निवास करना प्रारंभ किया और 1978 से स्थायी रूप से एक केंद्र का प्रारंभ हुआ।

प.पू. काकाजी भी दिल्ली-हरियाणा-पंजाब के मुक्तों को दर्शन, सेवा, समागम का अनुपम लाभ देकर सुखी करने आते-जाते रहते। दिल्ली में सत्संग करना रेती में ज़हाज़ चलाने जैसा दुष्कर कार्य था। पर, सर्दी-गर्मी, दिन-रात देखे बिना अपना खून-पसीना बहा कर चिलचिलाती धूप में रिक्शा, स्कूटर एवं बस में प.पू. काकाजी एवं प.पू. गुरुजी घूमते और दिसंबर-जनवरी की कड़ाके की ठंड में भी तड़के खुली जीप में हरियाणा-पंजाब जाने के लिए निकल जाते...

खूब परिश्रम के बाद 1985 में प.पू. काकाजी के साथ अद्‌भुत प्रीति से जुड़े, तत्कालीन केंद्रीय मंत्री मा. श्री एच.के.एल. भगतजी द्वारा दिल्ली विकास प्राधिकरण से हमें मंदिर निर्माण हेतु यह जमीन उपलब्ध कराई गई।

और... बैसाखी, शनिवार 13 अप्रैल 1985 के महामंगलकारी दिन, गुणातीत समाज के अध्यक्ष पू. कांतिकाका की प्रेरणा से, ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री योगीजी महाराज के उत्तराधिकारी गण–प.पू. काकाजी व सभी प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों की निश्रा में स. हरचरणसिंह नाग के करकमलों से 'श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर एवं आध्यात्मिक संशोधन केन्द्र' की शिलान्यास विधि हुई।

प.पू. काकाजी स्थूल रूप से सिर्फ तीन बार ही मंदिर की इस भूमि पर घूमे और... जंगम व स्थावर मंदिर का संकल्प करके 7 मार्च 1986, शुक्रवार को इस विरल महायोगी ने यकायक स्थूल रूप से हम सब के बीच से विदाई ले ली! अचानक घटी इस दर्दनाक घटना से सभी एकदम सन्न रह गए–शून्य मनस्क बने रहे। इस सदमे से उबरने में करीब डेढ़ साल निकल गया।

परंतु, प.पू. काकाजी ने तो सिर्फ स्थूल शरीर ही छोड़ा था! दिव्यस्वरूप से तो वे आश्रितों के चैतन्यों के विकास एवं उनके व्यवहार की पल-पल परवरिश पहले से भी अधिक करते हैं और प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई एवं प.पू. भरतभाई की उन्होंने हमें अनमोल भेंट भी तो दी ही है।

प.पू. पप्पाजी के शब्दों में–

प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई एवं ताड़देव के भाइयों ने प.पू. काकाजी को चिरंजीव-अमर कर दिया!

प.पू. गुरुजी ने हमें प.पू. काकाजी की कमी महसूस नहीं होने दी। प.पू. गुरुजी के रूप में उनकी हाज़िरी का यहां सभी ने एहसास किया है।

प.पू. काकाजी के संकल्प से पू. मल्कानी अंकल परिचय में आए और खूब आत्मीयता से प.पू. गुरुजी का दाहिना हाथ बन कर दिल्ली में मंदिर बनाने का बीड़ा उठाया! और... 3 फरवरी 1988 के मंगलकारी दिन, सभी प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों की सेरेछाया में मंदिर की आधारशिला रखी गई!

28 जून 1988 को दिल्ली में प.पू. काकाजी से जुड़ी बहनों ने भगवान भजने के लिए भागवती दीक्षा ली और 'अक्षरज्योति महिला केन्द्र' की शुरुआत हुई।

1988 से 1993 तक का समय मंदिर निर्माण कार्य में बीता। अत्यधिक परिश्रम लेकर प.पू. गुरुजी एक ओर मंदिर का निर्माण कार्य देख रहे थे, तो दूसरी ओर बार-बार जयपुर जाकर मूर्तियों का निर्माण भी देख रहे थे।

सालों पहले प.पू. काकाजी ने प.पू. गुरुजी को आशीर्वाद दिया था–

दिल्ली में तुम्हारे द्वारा बड़े-बड़े अद्‌भुत कार्य (सत्कर्म) करवाने हैं व इंटरनेशनल आध्यात्मिक संशोधन केन्द्र का विकास होगा।

साकार ब्रह्म की यह परावाणी साकार हो रही थी। 1990 में 24 फरवरी के दिन प.पू. गुरुजी के परिश्रम से दिल्ली सरकार द्वारा अशोकविहार के मेईन रोड का नाम 'स्वामिनारायण मार्ग' व वहां से अशोक विहार-III में प्रवेश करती लेन का नाम 'काकाजी लेन' रखा गया।

3 फरवरी 1994 को, प.पू. काकाजी के अमृतपर्व के मंगलकारी अवसर पर, सभी प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों की निश्रा में, मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा हुई और 'गुरुहरि योगीजी महाराज का संकल्प' साकार हुआ। यमुना तट पर, यानि दिल्ली में, प्रसन्नवदन करुणानिधान श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज शुद्ध गुरु परंपरा के साथ प्रतिष्ठित हुए।

यूँ भुज से सुरत तक के प्रदेश में ही फैला हमारा संप्रदाय और हमारा सर्वोत्तम एवं सनातन तत्त्वज्ञान, जिसे हम अपनी ही कई संकुचित भावनाओं के कारण गुजरात के बाहर नहीं ले जा पाए थे, वह अब दिल्ली के हमारे इस केन्द्र में से, साक्षात् स्वरूपों के संकल्प से, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब और उत्तर भारत में व्यापक बना! श्री अक्षरपुरुषोत्तम का सनातन जीवंत गुणातीत ज्ञान–ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म का जुड़ने का-प्रत्यक्ष की निष्ठा करने और कराने का-आत्यंतिकी मुक्ति का-जीवनमुक्तदशा प्राप्त करने का भगीरथ कार्य यहाँ शुरू हुआ। परिणाम स्वरूप, उत्तर भारत में वचनामृत अंत्य. 21 के मुताबिक आत्मबुद्धि व प्रीति से जुड़ा-भगवान का होकर, भगवान के बल और भगवान के आधार से जीता एक 'नूतन गुणातीत समाज'–एक दिव्य परिवार तैयार हुआ है।

करोड़ों रुपये खर्च करने पर भी जो संस्कार, कुटुंबभावना, प्रेमभाव, मैत्रीभाव, सुहृद्‌भाव, एकत्वभाव सिद्ध न हो सके, उनका यहां सिंचन हो रहा है। हर एक को यहां शांति, अपनापन, प्रभु की शक्ति का एहसास होता है। प.पू. काकाजी अक्सर कहते– *'दिल्ली मेरी और मैं दिल्ली का।'* उनके ये वचन आज भी प.पू. गुरुजी के पास व दिल्ली मंदिर में आने वाले सभी मुक्तों को अद्‌भुत शांति व बल देते हैं।

पू. मल्कानी अंकल के शब्दों में–

दिल्ली का यह मंदिर बनना अपने आप में इस बात की एक अनोखी ऐतिहासिक मिसाल है कि समर्थ गुरु शरीर छोड़ने के बाद भी अपने आश्रित शिष्यों के व्यवहार और चैतन्य की कैसी परवरिश करता है।

दूसरी ओर–जैसा कि गुरुवर्य योगीजी महाराज कहते–'ताड़देव अक्षरधाम का तख़्त!' और... प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी ने तो उसे *'गुणातीत समाज की गंगोत्री'* कह कर नवाज़ा, क्योंकि गुणातीत समाज की शुरुआत ताड़देव से ही हुई। साथ ही प.पू. गुरुजी के दिल में तो ताड़देव के प्रति एक अलग ही आकर्षण है। इसके अतिरिक्त मुंबई में सत्संग के सभी क्रियाकलाप अब पवई के 'अक्षरधाम' मंदिर से होने के कारण भावि में 'ताड़देव' का नाम कहीं धुंधला न पड़ जाए, इस प्रयोजन से दिल्ली में मंदिर के परिसर का नाम जो पहले 'अनिर्देश' था, उसे 2000 में सभी की सहमति से बदल कर प.पू. गुरुजी ने 'ताड़देव' रख दिया! यूँ सभी को यह एहसास भी होता रहेगा कि गुणातीत समाज की शुरुआत जहाँ से हुई, उसे हम कभी भूलें नहीं।

दो वर्ष बाद यानि–2002 में प.पू. काकाजी की साक्षात्कार स्वर्णजयंती के सुअवसर पर प.पू. गुरुजी के मन में आया–

'प.पू. काकाजी ने भगवान स्वामिनारायण के संदेश को व्यापक बनाने और गुणातीत ज्ञान के बीज को देश-विदेश में बोने में स्वयं को याहोम किया। हमेशा सब का मंगल ही चाहा। गुणातीत समाज के हर एक केन्द्र के प्रेरक-प्रणेता होते हुए भी हर एक विभूति को आगे किया और स्वयं को नींव में दबा कर हमारे लिए सुहृद्‌भाव का 'राजमार्ग' तैयार किया... सो, समाज में उनकी एक पहचान देने हेतु–उन्हें सम्मानित करने के लिए क्यों न डाक टिकट जारी की जाए?'

सो, प.पू. गुरुजी ने भारत सरकार को इस बारे में लिखित आवेदन किया। तत्कालीन केंद्रीय वस्त्र मंत्री व आत्मीय सत्संगीबंधु मा. श्री काशीरामभाई राणा साहेब के सहयोग से प.पू. गुरुजी के अंतर की यह भावना साकार हुई और 30 मार्च 2003 को प.पू. गुरुजी के प्रागट्य उत्सव पर, सभी प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों की निश्रा में, मा.

श्री अरुण शौरीजी – केंद्रीय संचार, सूचना प्रौद्योगिकी एवं विनिवेष मंत्री द्वारा प.पू. काकाजी की डाक टिकट जारी करी गई, जो सिर्फ गुणातीत समाज ही नहीं, बल्कि समग्र स्वामिनारायण संप्रदाय एवं महा गुजरात के लिए भी अत्यंत गौरव का विषय है।

तत्पश्चात् 28 मई 2006 को गुरुहरि पप्पाजी महाराज ने स्थूल रूप से भले ही विदाई ली, परंतु उनके पूर्व संकेतानुसार मानो वे सदैव के लिए दिल्ली मंदिर में आकर बस गए; जब 25 मार्च 2007 के मंगलकारी दिन प.पू. गुरुजी ने सभी प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों के करकमलों द्वारा, ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की मूर्ति के बिल्कुल साथ में, ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज की संगमरमर की लाईफ साईज़ मूर्ति प्रतिष्ठित करवाई। यूँ 'गुणातीत समाज के आद्यसर्जक' – जुगलजोड़ी – आज दिल्ली मंदिर के सिंहासन पर सभी को दर्शन का सुख देने के लिए विराजमान हैं!

स्व. श्री एच.के.एल. भगत साहेब के कहने पर, दिल्ली के तत्कालीन लॅफ्टनन्ट गर्वनर श्री रमेश भंडारीजी ने भगवान भजती बहनों के लिए डी.डी.ए. से जो जमीन दिलवाई थी, उस पर पिछले दस वर्ष से हो रहे भवन-निर्माण का कार्य इसी वर्ष में संपन्न हुआ और... 25 अक्तुबर 2007, शरदपूर्णिमा के महामंगलकारी दिन, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के करकमलों से 'अक्षरज्योति'* का उद्घाटन हुआ!

प.पू. गुरुजी के सर्वदेशीय उठाव से राजी होकर, मानो अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए गुरुहरि काकाजी महाराज ने, मंदिर के बगल में 'नेईबरहुड पार्क' के लिए वर्षों से बंजर पड़ी रही, जमीन डी.डी.ए. द्वारा मंदिर के सुपुर्द कराई। वर्षों पहले इसी सारी जमीन की ओर हाथ से इशारा करते हुए ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज ने तो प.पू. गुरुजी से कह ही दिया था कि जमीन के बारे में तू क्यों चिंता करता रहता है? तुझे यहाँ जितनी चाहिए उतनी जमीन मिल जाएगी।

प.पू. गुरुजी ने भी इस अनमोल सौगात की दिन-रात परवरिश करने में कोई कसर नहीं छोड़ी और केवल एक साल के अंतराल में ही इस जमीन का कायाकल्प करवा दिया।

प.पू. पप्पाजी ने कई बार कहा था – *'गुणातीत समाज का सर्जन, तीन फरवरी 1952 में प.पू. काकाजी महाराज को हुए साक्षात्कार से हुआ कहा जाए।'*
इस मर्म को उजागर करने के लिए प.पू. गुरुजी ने 13 मार्च 2009 के दिन, 'तीन फरवरी पार्क' के रूप में, पू. वशीभाई के कलकमलों से इसका उद्घाटन करवा कर, ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज एवं उनके साक्षात्कार दिन को सदैव के लिए अमर कर दिया!
प.पू. काकाजी हमेशा कहते –
'यह पावरहाऊस अखंड है, अखंड रहने वाला है।'
श्री अक्षरपुरुषोत्तम की तत्त्वनिष्ठा के मर्म को उजागर करता एवं गुरुनिष्ठा और गुरुभक्ति का आदर्श बना यह मंदिर युगों-युगों तक प.पू. काकाजी का जीवंत अनुपम परिचय देता रहेगा।
गुणातीत समाज की जय हो–जय हो–जय हो!
शुभं भवतु–मंगलं भवतु!
12 जून 2010, शनिवार

---

* अक्षरज्योति के उद्घाटन के अवसर पर प.पू. गुरुजी द्वारा दिया आशीर्वाद पृष्ठ 97 पर पढ़िए।

‘अक्षरतीर्थ’ में ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के अस्थिकुंभ की स्थापना – 26 अक्तुबर 1992, अन्नकूट

गुरुजी ने काकाजी को अमर कर दिया... – प.पू. पप्पाजी

यह हमारे लिए ‘अक्षरदेरी’ ही है... – प.पू. ज्योति बहन

'अक्षरतीर्थ' में ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज के अस्थिकुंभ की स्थापना – 11 जुलाई 2006, गुरुपूर्णिमा

गुणातीत समाज के
आद्य सर्जक, प्रणेता और प्राणाधार
ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी
यहाँ विराजमान हैं।

– प.पू. गुरुजी

‘अक्षरज्योति’ का उद्‌घाटन –25 अक्तुबर 2007, शरद्‌पूर्णिमा

‘अक्षरज्योति’ में गुरुजी के साथ मैं आया; यहाँ मकान में प्रवेश करते ही मुझे हुआ कि बहनों के लिए गुरुजी ने कितनी सुंदर व्यवस्था कर दी है! इस मंदिर के कोने-कोने से गुरुजी की भक्ति और प्रीति का अनुपम दर्शन हुआ... गुरुजी जहाँ रहते हैं–वो मंदिर तो अभी खूब अधूरा है। बहनों के लिए तो अद्‌भुत व्यवस्था कर दी है। साधकों के लिए परफॅक्ट मकान... लड़कियों को किसी भी प्रकार की कोई तकलीफ न पड़े–यह उनकी भावना!

– प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी

* 'अक्षरज्योति' के उद्घाटन के अवसर पर प.पू. गुरुजी ने बरसाए ये आशीर्वाद

अतिसमर्थ 'विभूति' प.पू. काकाजी की सेरेछाया में, उनके ही बल से, माया के साथ जंग छेड़ कर 'अध्यात्म की राह' पर अग्रसर गुणातीत समाज की वीरांगनाओं को –

सबसे पहले तो – पुरूषों की भांति बहनें भी स्वतंत्र रूप से आजीवन भगवान भज सकें, इस हेतु व्यवस्था कर देने के लिए स्वामिनारायण संप्रदाय में जिन्होंने गुरुवचन से एक क्रांतिकारी कदम उठा कर पहल की, बदौलत अपमान सहे - गालियाँ खाईं और अंत में संस्था ने जिन्हें भगतजी की तरह 'विमुख' भी किया उन **'दादुकाका की'** के रूप में पहचानी जातीं बहनों की यह सेवा करने का प.पू. काकाजी ने मुझे मौका दिया – निमित्त बनाया। इसके लिए उनके चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम!

अहोहो! काकाजी को मेरे प्रति कैसा और कितना प्रेम कि मेरा इतना पक्ष! और... इस बात को सोचते हुए पप्पाजी सहज ही याद आते हैं... विद्यानगर रामकृष्ण मिशन के हॉल में पोषीपूनम की हमारी शिविरें होती थीं, तब एक बार वहाँ भरतजी और हिरण के बच्चे का चित्र दिखाते हुए पप्पाजी ने मुझसे कहा – *ये काका और मुकुंद!* आज इस बात का तथ्य-मर्म समझते हुए मेरी आंखे नम हो जाती हैं कि वाकई, इन गुणातीत पुरूषों ने हमारे साथ कैसी अप्रतीम प्रीति की है? हमारी पात्रता भी देखे-करे बिना वे आशीर्वाद बरसाते ही रहे और साथ – साथ गढ़ाई भी करते रहे। एक बार मैं अपनी कमियाँ खोलते हुए काकाजी के पास कुछ बात करने लगा, तब उन बातों को पूरी सुने बिना वे बीच में ही बोले :

'तेरी सारी ही - संपूर्ण जिम्मेदारी मेरी है और तेरे द्वारा तो बड़े-बड़े सत्कर्म करवाने हैं। उसके बहाव में यह सब कहाँ धुल जाएगा, इसका पता भी नहीं चलेगा।'

आज शरदूपूर्णिमा! मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का प्रागट्य पर्व और साथ ही प.पू. स्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन !

प.पू. स्वामिजी ने इस महामंगलकारी दिन पर यहाँ 'अक्षरज्योति' में पधार कर, 'नैमिषारण्य' का उद्घाटन करके मूर्तियों की आरती की है और मुझे जो ढाड़स दी है, उसका तो किसी को अंदाजा भी नहीं लग पाएगा।

'अक्षरज्योति' यानि हमारी 'आनंदी'! वर्षों पहले किसी एक प्रसंग पर आनंदी को मैंने गुलाब के फूल वाली पिक्चर का एक छोटा सोविनियर भेजा था। उस पर राईटींग है – *'A single rose can be my garden.'* कह सकते हैं कि आनंदी दीदी द्वारा उस भावना ने आज साकार रूप लिया है और यहाँ तेरह बहनें भगवान भजती हो गईं।

आनंदी का इतिहास भी एक शौर्यभरे साहस की कथा है। वह स्वयं तो प्रेम की - आत्मीयता की मानो एक नाईटींगॅल ही है। इस बात से तो आप सभी परिचित भी हैं। जब भी किसी को मिलेगी - हमेशा हंसती! इस बारे में मैं अधिक कुछ कहूँ, वह अयोग्य ही माना जाएगा; गुजराती में कहते हैं ना कि दूल्हे का बखान कौन करे? दूल्हे की माँ! – ऐसा गिना जाएगा। सो, इस बारे में ज्यादा पिष्ट - पेषण नहीं करूंगा। वैसे भी सभी जानते हैं कि – आनंदी यानि? गुरुजी का प्यादा! मैं भी कहता हूँ – 'दीदी यानि? मेरा टॅप रॅकोर्डींग!' लेकिन भूलना नहीं कि मेरी तरह ही दीदी भी स्वतंत्र मिज़ाज की हैं।

आनंदी ने जब भगवान भजने का निर्णय लिया, तब घर के विरोध की वजह से दिल्ली में उसे कहाँ रखा जाए यह एक प्रश्न था। लेकिन, तब प.पू. काकाजी स्थूल रूप से विद्यमान थे; सो उनकी आज्ञा से मुंबई गौरांग के यहाँ-वनलता के यहाँ, फिर पंढरपुर राधा अक्का के पास और वहाँ से साहिबाबाद आर.के. अग्रवालजी के यहाँ आकर रही। आख़िर पंजाब-सवद्दी कलां में प.भ. धरमपाल के यहाँ – छः महीने अंडरग्राऊंड रह कर, दिल्ली वापिस आकर, हमारे प.भ. विजयबाबु की बहन बन कर उनके घर से भगवान भजना शुरु किया। सच! धन्यवाद हैं विजयबाबु को जिन्होंने ऐसी कशमकश के समय, समाज के डर व टीका चर्चा की तनिक भी परवाह किए बिना, एक पराई जवान लड़की को अपने यहाँ पनाह दी! फिर तो स्मिता-गौरी-स्वाती-निष्ठा जैसी बहनें भी इस मार्ग पर चलने को तैयार हुईं और इस छोटे मंडल ने A-103 के मंदिर के सामने के 1-B जनता फ्लैट्स में रह कर आराधना ज़ारी रखी। लेकिन, तभी अचानक प.पू. काकाजी ने अपनी लीला समेट ली!

पर, धीरे-धीरे दीदी यहाँ बहनों – भाभियों में ओतप्रोत होती गईं-सेवा में लग गईं और... महिला प्रवृत्ति भी संभाल ली। भगवान भजती बहनों की संख्या एवं प्रवृत्ति बढ़ती गई, सो वे 'शक्ति ऍपार्टमेन्ट्स' में रहने लगीं।

श्री एच.के.एल. भगत साहेब को प.पू. काकाजी के प्रति विशेष प्रीति थी ही। सो उन्होंने इन बहनों की व्यवस्था में खुद का योगदान देने की ही एक भावना से आऊट ऑफ धी वे जाकर डी.डी.ए. से मंदिर के नज़दीक ही बहनों के लिए 1989 में ज़मीन दिलवाई। वर्ष 1997 साल में ब्रह्मस्वरूप प.पू. पप्पाजी ने इस जमीन पर भूमिपूजन किया था और आज करीब दस साल के बाद बहनों के लिए यह भवन तैयार हुआ है। इस निर्माण के लिए दस साल का समय, वैसे तो ज्यादा ही कहा जाए। परंतु, इस दौरान कुछ ऐसे प्रसंग बने – जैसे कि पू. दीदी का हार्ट ऑप्रेशन, मेरी बाईपास सर्जरी, परछाईं का किडनी ट्रान्स्प्लान्ट – जिन के कारण निर्माण कार्य आगे ही खिंचता चला गया।

सचमुच, यहाँ के मुक्तों को खूब-खूब धन्यवाद है कि इन हर प्रसंग पर तो वे साथ में खड़े रहे ही, पर इससे भी अधिक, खुद का-खुद की सगी बहनों का – एक जरूरी काम रूका पड़ा हो, यूं अक्षरज्योति की चिंता भी करते रहे। पंजाब-जगरांव के हमारे पुराने जोगी – महेन्द्र जायस्वाल यहाँ आए भी हैं। वर्ष 2001 की साल में उसने अपना मकान बनाने के लिए एक प्लाट खरीदा, परंतु वहाँ मकान बनाने का कोई कामकाज शुरू ही नहीं करवाया। मैं जब भी उससे पूछता कि मकान बनाने का मुहूर्त कब कर रहे हो तो एक ही जवाब मिलता – 'गुरुजी! पहले अक्षरज्योति बन जाने दें, फिर शुरु करते हैं' और समय-समय पर वह लगातार अपना कॉन्ट्रीब्युशन भी भेजता ही रहता। हमारी निशि के अनिलजी ने अक्षरज्योति की सेवा के लिए ही आर्कीटॅक्ट का कोर्स किया और डी.डी.ए. की नौकरी को एक ओर रख कर, अक्षरज्योति का निर्माण कार्य संभाल लिया और मुझे निश्चिंत कर दिया। ऐसे तो किस-किस के नाम गिनवाऊँ?

अरे! जो खुद आर्थिक रूप से इसमें डायरेक्ट कॉन्ट्रीब्युट नहीं कर सकते थे, ऐसे अनेक छोटे बच्चे-युवक-लड़कियाँ-भाभियाँ रद्दी के हमारे अभियान में जुड़ गए। अच्छे-अच्छे घरों की ये महिलाएँ इस प्रकार घर-घर जाकर मांगने निकल पड़ती हैं, यह देख कर देने वाले भी दंग होकर उमंग से देते गए।

हमारे पुरी साहेब हैं। अभी-अभी ही बैंक से रिटायर हुए हैं। हमारे साथ उनको खूब यानि – खूब लगाव है। उनकी सिन्सियारीटी-काबिलियत इत्यादि के कारण बैंक ने उन्हें 25-30 हज़ार की सॅलरी की ऍडवाईज़री जॉब के लिए दोबारा ऑफर ही नहीं, बल्कि आग्रह ही किया। लेकिन, उन्होंने देखा कि गुरुजी को एक पढ़े-लिखे हेल्पींग और रिस्पॉन्सिबल हॅन्ड की बहुत ज़रुरत है। सो, कुछ भी विचार किए बिना उन्होंने उस ऑफर को ठुकरा ही दिया! यह है प.पू. काकाजी द्वारा यहाँ पनपाया हुआ कुटुंबभाव!

आख़िर-आख़िर में तो हमारा आशिष भी अपने नक्षु को छोड़ कर, दिन-रात देखे बिना, इस कार्य में कूद ही पड़ा और युद्ध स्तर पर काम उठा लिया। 'येन केन प्रकारेण' हमारा यह संघ काशी पहुँच ही गया। यह एक काम पूरा हो रहा है, इसका ही आज 'आनंद' नहीं है; पर जिस कुटुंबभाव से सबने मिल करके यह पूरा किया है, उसका 'हर्ष' है।

लेकिन, बहनें भी अब खूब सावधान रहें; अब आप ज़ाहिर में आ गए। इसलिए आपकी जिम्मेदारी खूब बढ़ जाती है। भूलना नहीं कि 'भगवान भजने' के लिए हम इस रास्ते चले हैं। इसके अलावा और कोई उद्यम-प्रवृत्ति करनी ही नहीं है। दूसरा सब तो टाटा-बिरला-अंबाणी परिवार-मित्तल-बिल गेट्स जैसों के द्वारा महाराज कराते रहेंगे। वह क्षेत्र-वह स्फीअर हमारा है ही नहीं। यह मेरा मानना है। **भगवान साधने और भगवान देने हैं।** इसके सिवा कुछ भी करना नहीं है। **ध्येय की यह स्पष्टता** रखोगे तो आसानी रहेगी।

प.पू. काकाजी कहते कि अक्षरपुरुषोत्तम के सिद्धांत से भगवान भजने की शुरुआत ही धाम, धामी और मुक्तों के भजन से होती है। यानि–हमारे लिए इसके सिवा और कुछ 'सत्य' है ही नहीं। सो, प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूप में महाराज का प्राकट्य और उन्हें सर्वोपरि जान कर उनके संबंध वाले सभी में सुहृद्भाव व निर्दोषभाव के सिद्धांत से, अपने परिवारजनों जैसी आत्मबुद्धि व प्रीति करना एवं दूसरों को कराते रहना। यह भावना जितनी अधिक फैले–ऐसे मुक्त जितने अधिक तैयार हों, उतना ही 'सत्संग' बढ़ा कहा जाए। यह एक ही धंधा हमें करना है। यदि याद हो तो– प.पू. काकाजी बोलते – *'हम इतने सालों से बापा की दुकान चला रहे हैं।'*

हम भूलें नहीं कि–प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी को 'सत्संग' का एक स्पष्ट दर्शन था।

यह बात कह कर प.पू. काकाजी को कोई ढिंढोरा नहीं पीटना था, ना ही अपनी डींगें मारनी थी। अब समझ में आता है कि वे हमें यह समझाना चाहते थे कि आप सब भी हमारी तरह यही चलाना। आत्मबुद्धि व प्रीति का सत्संग बढ़ाते जाना। देखादेखी भी दूसरी राहों पर भटक मत जाना। स्वामी की बातों में है कि –

'यदि ज़मीनदार बड़ा हो तो ज़मीन खरीद-खरीद कर इकट्ठी करे, बनिया बड़ा हो तो अधिक पदार्थ इकट्ठा करे, ब्राह्मण बड़ा हो, तो पुस्तक इकट्ठी करे और चरवाहा बड़ा हो तो गाय-भैंस-बकरियाँ इकट्ठी करेगा। पर क्या किसी ने एकांतिक भक्तों के टोले इकट्ठे किए हैं और किसी में कोई माल नहीं है। सो ऐसे साधु का समागम कर लेना चाहिए और एकांतिक साधु बनना...'

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी ने यह बात अपने ही बारे में की है। भगवान का वो भव्य स्वरूप; सो एकांतिकों के टोले इकट्ठे करने ही उन्होंने उद्यम किया है। हम भी बोलते हैं ना कि हमें भगवान का भव्य स्वरूप मिला! तो इसके सिवा दूसरा कुछ भी करके क्यों हम अपने गुरु को लज्जित करें? स्त्री-पुरुष भाव से परे रहते हुए भी अपने नियम-मर्यादा में रह कर 'एकता ही एकांतिकभाव' के न्याय से 'एकांतिक भक्त' बनें और इसी मार्ग पर ही सभी को ले जाने का उद्यम किया करें।

प.पू. काकाजी यही बात अलग शब्दों में कहते– *स्पीरीच्युल टॅक्नीशियन्स बन कर ऐसे दूसरे तैयार करो।*

सो, इसी ध्येय की ओर ही हम नज़र रखें और 'शुद्ध सत्संग' के मार्ग पर ही अग्रसर रहें –ऐसे भगवान स्वामिनारायण, स्वामी, सभी गुणातीत स्वरूप एवं प.पू. काकाजी आशीर्वाद बरसाएं–यही प्रार्थना। अंत में –

प.पू. स्वामिजी! आपने आज आरती करके मूर्तियों में प्राण भरे हैं। तो अब ये सभी बहनें हर प्रकार से निरामय-कुशल रहें और यहाँ आने वाले हर एक को शांति का अनुभव हो। हॉल के नाम के मुताबिक इस हॉल में बैठ कर भजन करने वाले को **'नैमिषारण्य'** का एहसास हो। जो भी यहाँ आएं, उन्हें यहाँ ही बैठे रहने का मन हो और भजन के बल से उन्हें अपनी हर समस्या का हल मिलता रहे –यही भगवान स्वामिनारायण, स्वामी और सभी गुणातीतस्वरूप एवं प.पू. काकाजी के चरणों में प्रार्थना सहित

तुम्हारे **गुरुजी** के जय स्वामिनारायण!

25 अक्तु. '07, शरद्पूर्णिमा

‘तीन फरवरी पार्क’ का उद्घाटन – 13 मार्च 2009, प.पू. गुरुजी का प्राकट्य दिन

तीन फरवरी 1952 यानि – गुणातीत समाज का स्थापना दिन-विजय दिन! – प.पू. पप्पाजी महाराज

तीन फरवरी पार्क...

राजधानी दिल्ली के अशोकविहार क्षेत्र में प्रवेश करते ही मुख्य मार्ग है– **'स्वामिनारायण मार्ग'**! वहीं से अशोकविहार फेज़-3 में प्रवेश करती लेन है– **'काकाजी लेन'**!! और... काकाजी लेन में स्थित 'श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर' के बगल में है– **'तीन फरवरी पार्क'**!!!

अपरिचित मुमुक्षु के लिए तो ये 'काकाजी' कौन और पार्क का नाम 'तीन फरवरी पार्क' क्यों, यह प्रश्न उठना स्वभाविक है। परंतु, गुणातीत समाज के सदस्य के लिए तो यह कोई प्रश्न नहीं, अपितु गौरवान्वित होने की बात है। क्योंकि–ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज के कहे अनुसार **'तीन फरवरी'** यानि– **'गुणातीत समाज का स्थापना दिन'**! इस दिन गुरुवर्य योगीजी महाराज ने ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज को भगवान स्वामिनारायण का साक्षात्कार करवाया था। तत्पश्चात् ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज ने गुरुहरि योगीजी महाराज के रूप में विचरण कर रहे साक्षात् प्रभु की सभी को पहचान करवाई और... उनके संबंध वाले सभी मुक्तों के साथ आत्मबुद्धि और प्रीति युक्त उठाव लिया। फलस्वरूप, एक 'योगी परिवार' पनपा, जो गुणातीत समाज के रूप में विकसित हुआ। **ऐसे समाज के अंग होने का हमें मौका मिला, यही हमारे जीवन की धन्यता है!**

ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की स्थूल हाज़िरी में दिल्ली मंदिर की ज़मीन के बारे में चर्चा चल रही थी, तब एक बार मंदिर की इस ज़मीन पर खड़े रह कर, हाथ से इशारा करते हुए, प.पू. काकाजी महाराज ने प.पू. गुरुजी को आशीर्वाद दिए–

'राजा, तुम्हें जितनी चाहिए उतनी ज़मीन यहाँ मिल जाएगी।'

28 मई 1985 के शुभ दिन सरकार द्वारा मंदिर के लिए यह ज़मीन तो मिली थी, परंतु मंदिर के बगल की ज़मीन पिछले 30 साल से बंजर जैसी व कूड़े-करकट से भरी हुई थी, जिससे आस-पास का पर्यावरण दूषित रहता। सो, प.पू. गुरुजी ने इसे स्वच्छ बनाने के हेतु से दो-तीन बार सरकार को अर्जी दी, लेकिन...

28 मई 2006 को ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज ने स्वधामगमन किया। थोड़े ही समय में प.पू. गुरुजी ने सभी की सहमति से ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की मूर्ति जितने कद की ही ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज की संगमरमर की मूर्ति बनने को दे दी, और... **25 मार्च 2007** के मंगलकारी दिन, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेबजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई एवं प.पू. भरतभाई के वरद् हस्तों से, ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज की मूर्ति प्रतिष्ठित हुई। मूर्ति प्रतिष्ठा के दूसरे ही महीने में यानि अप्रैल में 'दिल्ली विकास प्राधिकरण' द्वारा बगल की ज़मीन पार्क बनाने के लिए मंदिर को सौंपी गई।

गुणातीत समाज के मूलभूत सिद्धांत 'सर्वदेशीयता' को मूर्तस्वरूप देते हुए, प.पू. गुरुजी ने ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज की मूर्ति जो स्थापित की, मानो ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज ने इस ज़मीन द्वारा अपनी प्रसन्नता अपने लाड़ले 'मुकुंद' पर व्यक्त की! और... प.पू. गुरुजी भी गुरुभक्ति अदा करने से चूके नहीं। मंदिर से खूब आत्मीयता से जुड़े हरिभक्तों के साथ-सहकार से एक वर्ष में ही इस बंजर भूमि को सुंदर उद्यान के रूप में परिवर्तित करके कायाकल्प कर दिया और... दिल्ली सरकार द्वारा इसे **'तीन फरवरी पार्क'** नाम दिलवा कर ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के साक्षात्कार के दिनाँक को इतिहास में अमर कर दिया!

SHREE AKSHARPURUSHOTTAM SWĀMINĀRĀYAN MANDIR

'Taad-dev', Kākāji Lane, Swāminārāyan Mārg, Ashok Vihār - III, Delhi - 110 052 (India) ⋆ Tel: 011 2730 1327, 4709 1281
Fax : 011 4709 1280, E-mail: taaddev@ydsd.org